भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 16 | उदयपुर बुधवार 01 सितंबर 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

13 सितम्बर को 87वीं जयन्ती पर -

जीवन और मृत्यु को आध्यात्मिकता के साथ जीने वाले डॉ. नरेन्द्र भानावत

- नंद चतुर्वेदी -

डॉ. नरेन्द्र भानावत बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार थे। जीवन के अन्तिम पड़ाव में वे राजस्थान विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। 04 नवम्बर 1993 को उनका असामयिक निधन हो गया। प्रस्तुत लेख उनके सुपुत्र डॉ. संजीव भानावत द्वारा प्रकाशित स्मृति ग्रंथ 'नमन' से लिया गया है।

डॉ. नरेन्द्र भानावत ने जितने साहस से बल्कि जितने पराक्रम से जिन्दगी का संघर्ष किया उतने ही साहस से और पराक्रम से मृत्यु का मुकाबला भी किया। मृत्यु से मुठभेड़ के दिनों में वे कविताएं लिखते रहे। जीवन और मृत्य को एक साथ, सम्पूर्णता में देखना ही वास्तविक अध्यात्म है और नरेन्द्र ने उसे पूरी तरह आत्मसात किया था।

'नरेन्द्र-महेन्द्र दो भाई हैं' इस तरह प्रकाश 'आतुर' ने मुझे इन भाइयों की कठिन और संघर्षपूर्ण जीवन-गाथा सुनाई थी। महेन्द्र से बाद में मेरी दोस्ती हो गई। नरेन्द्र के सिलसिले में मुझे उनके प्रसन्न-मुख और बड़ी-बड़ी हंसती आंखों का आत्म-विश्वास हमेशा याद आता है। जीवन से जैसे कोई शिकायत न हो। कोई 'उपालम्भ' देने को न हो। अपने पुरुषार्थ से ही डॉ. नरेन्द्र भानावत ने अपरिचित और प्रतिकूल दुनिया को अपनी, जानी-पहचानी, मित्र दुनिया बना ली थी। इस दुनिया को जीतने में सबसे ज्यादा मजबूती नरेन्द्र की मां ने बनाई थी। 'ए मेरे मन' कविता संग्रह में 'मां' शीर्षक कविता में वह संघर्ष अंकित है जो 'मां और जीजी' ने अपने 'बेटों' और भाइयों के लिए किया है। 'मां' के जीवन-संघर्ष को रेखांकित करते हुए नरेन्द्र ने लिखा है-

'मुंह झाकरे उठकर दूसरों का अनाज पीसती / पड़ौसियों के घर केसर कुई से पानी लाती / गेहूं और दाल बीनती / चरखा चलाती / कपड़े सीती / गांव के पास जंगल से लकड़ी लाती / कण्डे बीनती। मां! तुमने जीवन में दुःख ही दुःख सहा।'

इस कविता में नरेन्द्र ने अपनी मां को बार-बार प्रगतिशील कहा है क्योंकि 'अनपढ़ होकर भी तुम पढ़ाई का मोल समझती थी।' पढ़ाई के सिलसिले में ही दूसरी बार नरेन्द्र अपनी मां की प्रशंसा में लिखते हैं- 'तू अनपढ़ होकर भी प्रगतिशील विचारों की थी। तूने सब सुविधाएं दीं। समाज की रूढ़ियों को ललकारा। बहू उच्च शिक्षा लेकर विदुषी बनकर समाज की सेवा करे। बच्चों में संस्कार के बीज वपन करे। इसी भावना से तूने हम दोनों को आगे बढ़ाया। खुद कष्ट की अग्नि में तपती रही, खपती रही पर हम शुद्ध स्वर्ण बनकर निखरें। यही सदा तेरी चाह रही।' अपने रोगग्रस्त हो जाने के कारण मां की वृद्धावस्था में सेवा न कर पा सकने का अवसाद नरेन्द्र की इस कविता में अत्यन्त भावुकता के साथ प्रकट होता है।

महेन्द्र ने अपने भाई के विवाह की रोमांचक और एक अर्थ में पर्दा-प्रथा को तोड़ने की जिद वाली बात सभी को बताई थी। वह महत्त्वपूर्ण बात थी, अब नहीं लेकिन उन दिनों जब नरेन्द्र इन्टरमिडिएट में पढ़ते रहे होंगे और शान्ता भानावत, गांव के स्कूल में आठवीं कक्षा में। महेन्द्र ने बताया कि भाई की जिद से हड़कम्प-सा मच गया। दहेज में कुछ न दिया जाए, विवाह-वेदिका पर बहू घूंघट निकालकर न बैठे जैसी भाई की शर्तें थीं।

चालीस-पचास वर्ष पहले के गांव में, ब्राह्मण-बनियों के परिवारों की जटिल मनोरचना और रूढ़िवादिता को समझते-देखते हुए सचमुच नरेन्द्र का विवाह का शर्त-नामा विस्मयकारी था। नरेन्द्र गरीब परिवार के थे और दहेज के धन का आकर्षण बहुत स्वाभाविक था लेकिन 'आदर्शों की चमक' किसी मुलम्मे की तरह उनके मन पर नहीं चढ़ी थी और वे जीवन के अन्त तक 'तृष्णा' के विरुद्ध खड़े रहे। नरेन्द्र ने 'मेरी रचना' कविता में अपने रूढ़िमुक्त विवाह और पत्नी डॉ. शान्ता भानावत की अदम्य कर्म-स्फूर्ति का मोहक वर्णन किया है। 'मेरी रचना' के कुछ अंश इस प्रकार हैं-

डॉ. नरेन्द्र - डॉ. शान्ता भानावत

'बहू दुहरा काम करती है / घर का भी, कॉलेज का भी / वह दोनों दायित्वों को सम्भावपूर्वक / कुशलतापूर्वक सम्भालती है / कभी आह नहीं करती / कभी झुंझलाहट नहीं लाती / बहू के रूप में वह मां की सेवा करती है / पत्नी के रूप में अपना पूरा फर्ज निभाती है / वह तन-मन से समर्पित है मेरे लिए।'

'मैं रूग्ण हूं तो वह मेरी औषध है / मैं थका-हारा हूं तो वह मेरा विश्राम है / मैं निराश हूं तो वह मेरी आशा है / मैं पथिक हूं तो वह मेरी मंजिल है / मैं मूक हूं तो वह मेरी भाषा और अभिव्यक्ति है / मैं शब्द हूं तो वह मेरी रचना है।'

जीवन और मृत्य को एक साथ, सम्पूर्णता में देखना ही वास्तविक अध्यात्म है और नरेन्द्र ने उसे पूरी तरह आत्मसात किया था। महेन्द्र ने अपने भाई के विवाह की पर्दा-प्रथा को तोड़ने की जिद वाली बात सभी को बताई थी। दहेज में कुछ न दिया जाए, विवाह-वेदिका पर बहू घूंघट निकालकर न बैठे जैसी भाई की शर्तें थीं। वे प्रफुल्ल मन वाले व्यक्ति रहे और जो सत्य उन्होंने तलाश किया वह 'सार्वजनिक सुख' था। परिस्थितियों के अनुकूल होने का तर्क डॉ. नरेन्द्र भानावत के सम्बन्ध में अप्रासंगिक है। यह उनकी जिन्दगी और कविता दोनों में नजर आता है।

मैं लगातार डॉ. नरेन्द्र भानावत के कठिन जीवन-संघर्ष के सम्बन्ध में सोचता हूं। उनकी निर्धनता, विषम सामाजिक परिस्थितियां, अन्त में भयावह रूप में मौत की ओर खींचते हुए कैंसर और इससे कुछ समय पहले आंख के 'रेटिना डिटेचमेन्ट' के सम्बन्ध में और इस सबके बावजूद उनकी उत्कृष्टताओं, उनके लेखन, उनकी विद्वता, धर्मस्थानों और विषाद रहित मन-स्वभाव के बारे में- तब मैं ज्यादा जिज्ञासातुर हो जाता हूं और उन शक्ति-स्रोतों को ढूंढ़ने लगता हूं जो मनुष्य के पास हैं और जो उसे अपराजेय और अद्वितीय बनाते हैं।

यहीं मुझे धर्मस्थानों की शक्ति पर विचार करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि धर्मोन्माद ने कई बार दुनिया को तबाह कर दिया है और वैचारिक पराधीनता को बढ़ाया है लेकिन धर्म-दृष्टियों ने कट्टरता के विरूद्ध अगणित लड़ाइयां भी लड़ी हैं और बगावत करने वालों ने बहादुरी से प्राण तक दिये हैं। वास्तव में ही दुनिया सारी रचनात्मक शक्तियों की तरह उदार धर्म-दृष्टियों ने मनुष्य के रचनात्मक संकल्पों को बनाने और बचाने में बहुत मदद की है।

नरेन्द्र के उल्लास और शक्ति का केन्द्र उनकी ये धर्मास्थाएं ही हैं। उनके जीवन और कविताओं को मिलाकर देखें तो वे उस बोध की ओर ले जाती हैं जिससे जीवन के गहनतम अर्थ खुलते हैं। कविता या साहित्य का आनन्द 'रचना' ही है लेकिन किसे रचना है इसका ही उत्तर देना हो तो शायद नरेन्द्र ने जो उत्तर दिये हैं उनसे हम सहमत होंगे। वे लिखते हैं-

'मैं अपने भार से लदा न रहूं / अपने रस को अपने में कैद न रखूं / अपना फल सबको बांटूं / अपने रस से सबको सरस बनाऊं / आश्रयहीन को आश्रय दूं / दग्ध संतप्त राही को स्नेहभरी छांव दूं।'

किसी जगह जाकर अध्यात्म का यह अनुभव सामाजिक अनुभव के साथ तदाकार हो जाता है तब वह न दीन का भाव रहता है न दया करने की इच्छा, वह शुद्ध प्रार्थना होती है। प्रार्थना की कविता में व्यापक लोक-हित की कामना होती है साधुओं की और गृहस्थों की भी। गृहस्थों की प्रार्थना-कविताएं ज्यादा विदग्धता के साथ लिखीं होती हैं क्योंकि वे जिन्दगी के सुख-दुःख, मान-अपमान की गर्म राख से निकलती हैं।

दुनिया को सबके लिए रहने के लायक सुखद और सुन्दर बनाना धर्म-नीतियों और आस्थाओं का व्यापक हिस्सा है यह नरेन्द्र भूलते नहीं हैं। उन्होंने अपनी दुनिया को सार्थक बनाने में जिन धर्मस्थानों से प्रेरणा ली वे जैनधर्म की ही नहीं, 'मानव धर्म' की आस्थाएं भी हैं। जब तक वह गरीब दुनिया, गरीब गांव, चक्की पीस-पीस कर अपने बालकों को पढ़ाने वाली माताएं और छोटे 'बींद-बींदणियां' चार-चार बालिश्त घूंघट निकालने वाली बहुएं और सतीप्रथा का महिमा-मण्डन है, तब तक डॉ. नरेन्द्र भानावत के सपनों को पूरा करने का काम बाकी है।

'ए मेरे मन' की प्रार्थना-कविताएं निकट आती मृत्यु के दबाव में तो लिखी ही गई हैं लेकिन वे दरअसल एक आह खाए हुए और दुःख से भीगे हुए कवि ने लिखी हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनमें व्यक्तिगत निर्वाण की नहीं, लोक-मंगल और समता की अत्यन्त आत्मीय और उदात्त कविताएं व्यक्त हुई हैं। यह धर्म की शक्ति है। धर्म इस तरह की कविता की शक्ति देता है। कविता में नरेन्द्र ने लिखा-

'प्रभु! मैं तुम्हारी प्रार्थना इसलिए करता हूं कि मैं जन-जन का कल्याण करूं / अंधेरे में प्रकाश बिखेरूं / अज्ञान में ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित करूं / कहीं अभाव-अभियोग न रहे / हिंसा, आतंक और भय का भूत भागे / सब परस्पर शांतिपूर्वक हिलमिल कर रहें / एक-दूसरे का साथ दें / साथ-साथ उठें / साथ-साथ खाएं / साथ-साथ काम करें / किसी के प्रति राग-द्वेष न हो / दूसरों की बढ़ती देखकर प्रसन्नता का भाव जगे।'

देखने की बात यह है कि अपने दुःखों और संतापों में से हम क्या निकालते हैं- कौनसा जीवन-दर्शन?

नरेन्द्र ने अपने अनुभवों से जिस तरह का जीवन-दर्शन तैयार किया था वह जैन-दर्शन से प्रभावित था लेकिन वह विकृत यथार्थ से टकराता भी था। वे प्रफुल्ल मन वाले व्यक्ति रहे और जो सत्य उन्होंने तलाश किया वह 'सार्वजनिक सुख' था।

इस तथ्य की तरह मैंने 'माटी-कुंकुम' की कविताओं का परिचय कराते हुए लिखा है- 'माटी-कुंकुम' की कविताओं में उत्साह का जो 'अनवरत स्वर' है वह नरेन्द्र के पितृ-हीन संसार में भोगी हुई यातनाओं के खिलाफ 'अस्तित्व-रक्षा' का साहसिक स्वर है।

आदमी में जो पराजित न होने का भाव है वह इन कविताओं में है। एक-के-बाद-एक कविता पढ़ता हूं तो इतना स्पष्ट होता है कि आदमी के पास जो न टूटने वाला सत्व है और जिसे धारण किये रहने की आकांक्षा आदमी में रहेगी वह इन कविताओं को खास तरह का स्थायित्व देंगी।

परिस्थितियों के अनुकूल होने का तर्क डॉ. नरेन्द्र भानावत के सम्बन्ध में अप्रासंगिक है। यह उनकी जिन्दगी और कविता दोनों में नजर आता है। 'माटी-कुंकुम' की एक कविता का अंश यह बताता है कि जिन्दगी और दुनिया बनाने में वे कितनी उमंग से आगे बढ़े हैं-

'तुम बढ़ो नभ में उजेला चांद छू लो / सिंधु से अमृत निकालो और पीलो / प्यार से, सहकार से, श्रम से, धरा से / आदमी की भांति सौ-सौ साल जी लो / हर निशा में, हर दिशा में स्नेह-कण से / मैं तुम्हारा हृदय मंदिर लीपता हूं / तुम करो शृंगार श्रम के सीकरो से / मैं तुम्हारी भाग्यरेखा खींचता हूं।'

दुनिया को सबके लिए रहने के लायक सुखद और सुन्दर बनाना धर्म-नीतियों और आस्थाओं का व्यापक हिस्सा है यह नरेन्द्र भूलते नहीं हैं।

विद्वद्जनों में उनका आदर और महत्त्वपूर्ण स्थान उनके श्रम और पुरुषार्थ के कारण है। उन्होंने अपनी दुनिया को सार्थक बनाने में जिन धर्मस्थानों से प्रेरणा ली वे जैनधर्म की ही नहीं, 'मानव धर्म' की आस्थाएं भी हैं।

अब भी नरेन्द्र की याद में मेरे सामने दुनिया और वह समाज है जिसे खूबसूरत बनाने की वह लगातार कोशिश करते रहे। जब तक वह गरीब दुनिया, गरीब गांव, चक्की पीस-पीस कर अपने बालकों को पढ़ाने वाली माताएं और छोटे 'बींद-बींदणियां' चार-चार बालिश्त घूंघट निकालने वाली बहुएं और सतीप्रथा का महिमा-मण्डन है, तब तक डॉ. नरेन्द्र भानावत के सपनों को पूरा करने का काम बाकी है।

स्मृतियों के शिखर (127) : डॉ. महेन्द्र भानावत

फूला पारगी का पूरा परिवार लोकचित्रकारी वाला

राजस्थान में आदिवासी भीलों की सबसे घनी बस्ती उदयपुर जिले में है। इसमें पारगी गोत्र के आदिवासी अपनी पारम्परिक चित्रकारी के लिए बेजोड़ हैं। उदयपुर से 18 किलोमीटर दूर छोटी ऊंदरी नामक गांव में इनकी सर्वाधिक बस्ती है। यहां के पारगी परिवारों में चित्रकारी के जो रूप देखने को मिलते हैं उनमें उनकी जीवन संस्कृति के कार्य, कर्म और कौशल के कई रूप उनकी जीवनधारा के मर्म को रेखांकित करते हैं। कई कहानी-किस्से, कथा-अन्तर्कथाएं, गाथा-मिथक, प्रतीक कार्यकलाप, धार्मिक आस्था विश्वासों से बंधे देवी देवता इनकी चित्रकारी में बखूबी मुखरित हुए मिलते हैं।

खोजबीन से यह तथ्य हाथ लगा कि लगभग दस पीढ़ियों से एक ही परिवार के वंशज चित्रकारी की उदात्त परंपरा को लिये हैं। इस परिवार में वर्तमान में फूला पारगी (48) का नाम बड़ा जाना माना है। फूला का पिता होमा, चाचा अमरा और अमरा का लड़का कुबेर, फूला का दादा रामा, दादी वदकी और उनके तीनों पुत्र उदा, हामा तथा अमरा, फूला का परदादा उमा एवं लड़पड़ दादा यानी उमा का पिता रोड़ा भी चित्रकारी का सधा हाथ लिए था। फूला की मां धनकी के चित्रों का प्रभाव भी फूला ने ग्रहण किया।

यही नहीं, फूला की पत्नी चंपा (44), पुत्री जीवी (16), पुत्र धूला (21) और बंशी (18), धूला की पत्नी प्रेमा (19) भी चित्रकारी में दक्षता लिए हैं। फूला के परदादा उमा के पौत्र गोमा ने अपने चित्रों द्वारा दूर-दूर तक ख्याति अर्जित की। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी भी लगी। गोमा का पुत्र भीमा भी अपने पिता की राह पर चित्रकारी में कुशल है लेकिन उसे अभी भी पारखी निगाहों की प्रतीक्षा है। अपने गांव-घर की देहरी के बाहर इनके चित्रों की जो पहचान बननी थी वह नहीं बन पाई है। उदयपुर के सांस्कृतिक केन्द्र के शिल्पग्राम की झोंपड़ी में प्रतिवर्ष ही फूला तथा उसके परिवार के सदस्य चित्रकारी से अपना सुशोभन देते नजर आते हैं पर वे चित्र मधुबनी चित्रों की तरह चलन को नहीं पकड़ पाये हैं। उदयपुर के ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट (टीआरआई) के सांस्कृतिक अधिकारी भगवान कछावा ने बताया कि यहां के संग्रहालय में अवश्य फूला, गोमा के चित्र लगे हैं पर जैसे गुमनाम ही हैं। फूला परिवार से जब-जब भी मिलना हुआ, कछावा मेरे साथ थे।

किन्हीं किन्हीं चित्रों में सामान्य से हटकर यथार्थ से परे होने के दिग्दर्शन किसी विशिष्ट अर्थ-बोध के सूचक हैं। यथा- हवा में झूलते पांव, लहर लेते हाथ, बांकी टेढ़ी आंखें, ये सब यथार्थ से परे के दर्शन हैं। पूछने पर बताया गया कि वस्तुत: यथार्थ तो कुछ होता ही नहीं है। सब परिवर्तनशील है। बदल रहे हैं। प्रकृति का, हवा का, पानी का, आग का स्पर्श पाकर निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। सब भ्रमणशील हैं। फिर आदमी को देखो। एक जैसा वह है कहां ! कितनी तरह के काम कर्म में लीन रहता है। हवा का, पानी का, अगन का संसर्ग पाकर कहां एक सा रह पाता है। उसके भिन्न-भिन्न कर्म, भिन्न-भिन्न सोचने समझने के आयाम ही उसे बदलाव देते रहते हैं। जैसे समग्र प्रकृति, समग्र सृष्टि नित-नव्य भव्य परिवेश लिए रहती है वैसे ही आदमी भी एकसा नहीं रहता है। यह अलग बात है कि हम आँखों से उसके रूप स्वरूप को पूर्णत: देख नहीं पाते हैं। वैसे भी हम कहां बहुत से सूक्ष्मातिसूक्ष्म कहे जाने वाले की सुध ले पाते हैं। उनका अतल खोज पाते हैं।

चित्र में मुख्यत: पानी और उसमें शिव पार्वती दिखाये जाते हैं। पानी का रंग श्वेत, कहीं नीला, कहीं हरा और इन रंगों का मिश्रित रूप होता है। श्वेत पारदर्शिता का, पवित्रता का प्रतीक, नीला उसके गहरेपन का तथा हरा प्रकृति से तादात्म्य का, पेड़-पौधों तथा वनांचल की हरीतिमा का दरसाव लिए चित्रित है। यह स्वरूप सृष्टि के आदिमपन का सूचक है। उसकी स्वच्छता, स्वस्थता और सौम्य पारदर्शिता का रचाव है।

फूला पारगी का परिवार

फूला को जब शास्त्र में वर्णित गणेश तथा हनुमान की घटना से परिचित कराया गया तो बोला, शास्त्र तो मनुष्य की रचना है। जितने मनुष्य उतनी बातें। हम लोग शास्त्र पढ़े नहीं। मनुष्य तो बहुत बाद का जीव है। वह सच कैसे बता सकता है जब उसने प्रकृति की रचना देखी ही नहीं। हमारे पुरखों ने धरती और आकाश के छोर देखे हैं। हम भी देख रहे हैं। जो दिखा रहा है वही अनुभव और ज्ञान दे रहा है। चित्रकारी करवा रहा है। समझ दे रहा है। हमारी पोथी प्रकृति है और उसके परमेश्वर शिव-पार्वती हैं।

सेमल के पेड़ पर मोर का चित्रांकन। पेड़ सूखा हुआ। सूखी डालियां। एक भी पत्ता नहीं। किस्सा है कि मोर और मेघ दोनों भाई हैं। दोनों खेलते-खेलते लड़ पड़े। मेघ बोला-'तेरा जीना हराम कर दूंगा। मैं बरसूंगा तो तेरा जीवन बचा रहेगा।' मोर बोला- 'हेंकडी मत मार। यदि ऐसा ही है तो करके दिखादे।' हार जीत हुई।

मेघ अपनी असलीयत पर आ गया। नाराजगी ली तो बारह बरस तक चुप्पी साधे रहा। बरसा ही नहीं। अकाल पड़ गया। सब मरने लगे। मोर सेमल की खोखल (तने के छेद) में जा छिपा। सफेद कंकड़ खाकर जैसे तैसे समय काटा। बोला- 'मेघ पापी और महा दुष्टि है। सारी नदियां सूख गई हैं। पानी की एक बूंद भी नजर नहीं आती। कितना पाप चढ़ गया है उस पर।'

मेघ यह सुन और गुस्से से भर्राया। नहीं बरसा। मोर बोला- ''मैं मरने वाला नहीं। हवा की नमी मुझे जिन्दा रखेगी पर तुझे तो गाली ही देगी।' उसका यह कथन मेघ को लगा। गुस्से में ही सही, वह बरसा और इतना बरसा कि मोर भी शायद बच पाये पर मोर लगातार बोलता रहा- 'मे हो, मे हो' अर्थात् मैं हूं, मैं हूं। कहते हैं अंत में इन्द्र ने अपनी हार मानी। कहा-'तू बड़ा मैं छोटा।' तब से मोर आज भी 'मे हो, मे हो' कह अपनी उपस्थिति देता दिखाई दे रहा है। चित्र में मोर पेड़ से चिपका हुआ है। आसमान काला है यानी मेघ बरस रहा है। मोर का चिपकना अकाल को दृश्यगत करता है। दु:ख का दरसाव। अफसोस और चिंता का दरसाव। सृष्टि के नष्ट होने का अवसाद। घने काले आसमान का दरसाव मेघ यानी इन्द्र का कोपभाजन होना है।

जनजातियों में कई ऐसे आख्यान हैं जो सृष्टि के विकास के क्रम को उद्घाटित करने में सहायक बनते हैं। इससे स्पष्ट है कि मानव के पास जो भी संज्ञान है वह किसी-न-किसी शक्ति-विशेष से प्राप्त हुआ है। आदिवासी चित्रों में वह सब मिलेगा जो उनके जातीय स्मृति न्यास का सहज संचरण है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता विभिन्न रूपाकारों में प्रकाशित हुआ दिखाई देता है। इन चित्रों में जनजातीय स्मृतियों, मिथकों, कथा-कोषों में जो बिम्ब गहराये मिलते हैं वे सचमुच में अचरज में डालने वाले हैं और नागरजनों के लिए सर्वथा विलक्षण तथा चौंकानेवाले हैं। इन चित्रों में यह तो भाषित होता है कि जनजाति का जीवन कितना धर्म और अध्यात्म से बुना हुआ है और कितने मिथक अनुष्ठान तथा अभूत संज्ञान से अन्वेषित है।

आदिवासी समाज राम के प्रति पूर्ण आस्थावान है। सीता अपने सत के कारण पूजा रही है। रामजी ने घर छोड़ा था पिता के कहने से। वे संन्यासी नहीं थे। उन्होंने गृहस्थ नहीं छोड़ा था इसीलिए भरतजी ने राजगद्दी नहीं संभाली। राम वापस लौटेंगे। असली दावेदार वे ही हैं सो भरतजी ने सद्बुद्धि से काम किया।

यह भी कहा जाता है कि दशरथजी ने राम के वियोग में प्राण छोड़े थे। प्राण छोड़ते समय उनके मुख से 'हा राम' निकला था, हे राम नहीं। छलधारी सुवर्ण मृग के बाण लगने पर उसने भी 'हा लक्ष्मण' कहा था। हे राम का उच्चारण जीवित व्यक्ति आह्वान के लिए करता है, मरणासन्न के मुंह से 'हा ' ही निकलेगा 'हे' नहीं। फिर दशरथ को राम की अनुपस्थिति में दाह संस्कार के लिए नहीं ले जाया गया, तेल में रखा गया था। राम के चौदह वर्ष पूर्ण कर अयोध्या लौटने के पश्चात उन्हीं के हाथों से उनका दाह कर्म किया गया था। ऐसी स्थिति में भी भरत का राजगद्दी नहीं संभालना ही उचित था। भरत पूर्णत: नीतिवादी थे। उन्होंने अनीति का मार्ग कभी नहीं अपनाया। इसीलिए कहा जाता है कि भाई हो तो भरत जैसा।

गोमा के बहुत सारे चित्रों में एक चित्र बैल जुते एक रथ का देखा। उस रथ में एक बच्चा सोया हुआ था जो अपने पांव का अंगूठा चूस रहा था। पूछने पर उसने बताया कि ये अयोध्या के राजा दशरथ हैं। मुझे अचरज हुआ। गोमा ने इस सम्बन्धी कथा सुनाते हुए कहा कि अयोध्या में एक नामी सेठ था। उसके एक नौकर था जो बड़ा पंडित और ज्ञानी था। सेठ उसे प्रतिदिन एक स्वर्ण मोहर देता। पंडित उसे अपने परिंडे के नीचे रख देता जहां टपक-टपक पानी गिरता। एक दिन वहां एक पौधा निकल आया।

यह खबर दशरथ के पिता रघु के पास पहुंची। रघु यह विद्या जानता था पर कभी उसका प्रयोग नहीं किया। अत: उसने भी यह प्रयोग शुरू कर दिया। रघु ने एक-एक कर दस मोहर रखी। मोहरें जमीन में धंसती गईं। एक दिन रघु ने वह भाग खोद डाला। वह ज्यों-ज्यों खोदता जाता, एक-एक अंगुल पर एक-एक रथ निकलता। ऐसे कर कुल दस रथ निकले। नौ रथ खाली थे। दसवें रथ में एक बालक सोया मिला जो अपने मुंह में अपने पांव का अंगूठा लिये चूस रहा था। राजा रघु ने इसे अपना पुण्य प्रताप माना और उसका नाम दशरथ रख दिया। यही दशरथ अयोध्या का नामवर राजा हुआ। रामचन्द्र इसी राजा दशरथ की संतान थे। अन्य नौ रथ बैल विहीन थे पर सोने के थे। यह दसवां बड़ा ही कलात्मक और बड़ा भव्य दिव्य था। इससे स्पष्ट है कि राम अलौकिक, असाधारण एवं अमोलक पुरुष थे।

आदिवासी चित्रकला में वे सभी विषय सम्मिलित हैं जो सृष्टि और उसके आरपार के हैं। जो आदिवासियों की निगाहों से गुजर चुके हैं और वे भी जो उनके सोच में सम्मिलित हैं, उनके विचारों में कौंधते हैं। उनकी कल्पनाओं में कुदबुदाते हैं। उनके चित्रों में नेवले सांप की लड़ाई के दृश्य बड़े विचित्र हैं। गोमा फूला ने बताया भी कि दोनों की लड़ाई हम देखते रहते हैं। सांप कितना ही भयंकर और फुफकार देनेवाला हो, नेवला लगातार उससे लड़ता रहेगा। सांप से डर उसके जहर से लगता है पर नेवला जानता है कि कौनसा सांप जहरीला होता है।

कहते हैं, लड़ाई से पूर्व और सांप को अध-घायल अवस्था में छोड़ नेवला रूंखडी (पौधा विशेष) के पास जाकर उसके पत्तों से अपना मुंह पौंछ आयेगा ताकि जहर का असर उस पर नहीं हो। कुछ तो यह भी कहते हैं कि नेवले पर किसी तरह के जहर का कोई असर नहीं होता। मैंने गोमा-फूला से पूछा भी कि अपवाद ही सही, नेवला कभी तो सांप से हारता ही होगा। वे बोले, 'हमने किसी नेवले को सांप से हारते नहीं देखा। चित्र भी ऐसा कभी नहीं बनाया जिसमें नेवला सांप से पराजित हो रहा हो।'

हल का कार्य खेती योग्य भूमि तैयार कर उसमें बीज वपन करना है। ऐसे हल को लेजाते दो बैलों में एक का रंग हरा और दूसरे का लाल देख मुझे आश्चर्य हुआ। पूछा कि ऐसे बैल कहीं देखे नहीं गये तो गोमा बोला, 'देखे मैंने भी नहीं हैं और न सुना भी है पर इनका अर्थ बड़ा गहरा है। जो बीज बोते हैं उससे उम्मीद जागती है कि फसल खूब हरीभरी हो और उसके बाद उसकी परिपक्वता की पहचान उसकी गहरी लालिमा हो। यही हरे और लाल रंग के बैलों का अर्थ है।' इसलिए जो जैसा दिखाई दे रहा है वह उसका जो भी रूप हो पर गहरे में उसका प्रतीकार्थ बिंबार्थ भाव अलग ही है। ऐसी भी प्रसिद्धि है कि लाल रंग समग्र पृथ्वी की लम्बाई तथा हरा रंग चौड़ाई का प्रतीक है। बैलों ने पूरी पृथ्वी के भार को अपने कंधे पर उठा रखा है। हल पृथ्वी का सूचक है।

ऐसा ही चित्र ऊंट और उसके आगे चलते ऊंटवान का है। ऊंट का मुंह बकरी सदृश है और पूंछ भी ऊंट जैसी नहीं है। पेट भी अपेक्षाकृत मोटाई लिये है। गोमा बोला, ऊंट बकरियों के बीच खूब खाकर, धपकर आया है इसलिए पेट भरातरा और मुंह बकरियों जैसा है लेकिन आकार में और फिर उसकी पीठ पर कांठी कसी हुई है। उसकी नकेल थामे उसका मालिक चल रहा है जिससे ऊंट की ही कल्पना साकार होती है।

इस प्रकार आदिवासी चित्रकला के अनंत अनोखे विषय हैं। आदिवासियों के जीवन का परिवेश अति सूक्ष्म, व्यापक और वैविध्य लिये है। प्रकृति का, पृथ्वी का, आकाश का और पाताल का जो ज्ञान उन्हें मिला है, जितना उन्होंने अपनी आंखों से देखा है, सुना है और भोगा है, उसका पार नहीं है। हम उनसे सर्वथा अभिज्ञ हैं। प्रकृति के जितने भी कार्य व्यापार हैं वे उसके पूर्ण साक्षी एवं सहभागी हैं। कई मायनों में वे स्वयं भी प्रकृतिस्थ हैं। वे जानते हैं, बीज से शुरू हुई यात्रा के कितने चरण होकर अंत में उस यात्रा का समापन कैसे होता है।

वे जंगल के मंगल हैं। उनके हिये खुले हैं। घर भी खुले हैं। सारी इन्द्रियां, सारे सरोकार, सारे जीवनाचार प्रकृति से बुने हैं। बीज के बदले अनंत रूप, जीवजन्तुओं का संसार, रूंख लताओं के झिलमिल आसरे, फसलों के फलित, पशु पक्षियों के स्वेच्छाचार, दृश्य शक्तियों के अदृश्य कौतुक, अदृश्य शक्तियों के करिश्में, मनुष्य और उससे जुड़े देव, भूत प्रेत के भयावने रूप, उनके कारनामें, जड़ी बूटियों के कमाल सबके साथ उनका रमना, सहचराना भाईपा, कहां तक उनकी पहुंच नहीं है! वे शक्तियों को जगाते हैं। उनका आह्वान करते हैं। उन्हें रिझाते हैं, झगड़ते हैं, रेलमपेल करते हैं। अगले-पिछले न जाने कितने पीछे के और न जाने कितने आगे के युगबोध के बेतार के तार उनसे जुड़े रहते हैं। ये सबके सब उनकी चित्रकारी में चित्रोपम हुए रहते हैं। वे कहते भी हैं, सब चित्र ही हैं। चाहे कल्पना से, चाहे अनुभव से, चाहे सीख से और संगत से सबकी गत एक है। जो एक चित्र है वही अनेक विचित्र है।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 सितंबर 2021

सम्पादकीय

धरती की हरित क्रांति की ऋतु

वर्षा ऋतु हमारी धरती की हरित क्रान्ति की ऋतु है। यही ऋतु है जब चारोंओर धरती का कण-कण उर्वरा हुआ लगता है। इसी ऋतु में अनेकानेक ऐसे जीव नजर आते हैं जो अन्य ऋतुओं में दिखाई नहीं देते। इसका असली दृश्य देखना हो तो गांवों में चले जाइये। जंगलों का नजारा देखिये। शहरों में तो धरती भी कहां, कितनीकृ दिखाई देती है।

शहर में चैन कहां है ? सब ओर तो बेचैनी है। वहां जो भी पहुंचता है उसे वह हड़पने की कोशिश में रहता है। सबकुछ निचोड़ लेता है जैसे रस विहीन गन्ना लगता है। वहां किसी को, किसी से कोई सरोकार नहीं है। गांव तो पूरा का पूरा प्रत्येक का है। वह जमाना बहुत पीछे नहीं छूटा जब किसी का जंवाई गांव पहुंचता तो वह केवल उसी परिवार का नहीं, पूरे गांव का जंवाई बन जाता। वहां पराया कोई नहीं है।

गांव में ही अहा जिन्दगी है। कोई हड़बड़ाहट नहीं। खड़खड़ाहट नहीं। लड़झगड़ाट नहीं। संप है, सौहार्द है, समझ है, समय है, इसलिए दु:ख का दाड़ा आ भी जाता है तो पछताते भागने की तैयारी में रहता है। वहां आत्मा है सो आत्मीयता है।

यह सब सीख देती है गांव की हरियाली, वृक्षावली, रेंट की रूड़की, चड़स की चलकी, ठाकुरजी की ठणकाई। वहां रूंख मरता, कटता, धधकता, चिल्लाता, रोता, चीर-चीर नहीं होता। नदी सूखती नहीं। नाले नागे नहीं दिखते। वहां रामी, रामा, नानारामा है। किसना, गोपी, जसोदा, सीता सतवंती है। रोड़ी, नगतरी, ऊंकार, ओंकार है। चतरी, मथरी, कंकू, काजल है। पाताल तक पहुंच देता और आगास तक अटोटी देता रूंखड़ा है। कोई भूखेड़ी नहीं, धापू ही धापू है।

वहां बीमारी की मार नहीं है। कभी किसी को कुछ हो भी गया तो देवता की झाड़ू, फूलपाती और भभूत है। जड़ेली-वड़ेली, सूखे फल-फूल, कुलके-कुलकी, ईंट-पत्थर, खरड़-अरड़ का इलाज है। तंत्र-मंत्र, मूठी-मनौती का इलाज है। अड़क कलाली, टोटके-टोटकी की माया है।

वहां सब चंगा तो कठौती में गंगा है। घर-घर घूंघट है। नारंगी रसीली नींबूड़ी है। धोल्या पील्या बळद है। गंगा जमनी साथण्यां है। रामजी राजी है। चारूंमेर खुशहाली है। यही हरित क्रान्ति है। मौसम का मिजाज और पटेलां की पिरोळ है।

पोथीखाना

तपोपूत आचार्यश्री उमेश शास्त्री स्मृतिग्रंथ

आचार्य श्री उमेश शास्त्री ने संस्कृत और हिन्दी में समान रूप से सृजन किया। संस्कृत में काव्य, व्याकरण, अनुवाद आदि से संबद्ध करीब दो दर्जन ग्रंथ प्रकाशित हैं। हिन्दी में महाकाव्य, खण्डकाव्य, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, समालोचना, कहानी संग्रह, शोध, बाल साहित्य, कविता-संग्रह आदि से संबद्ध करीब 60 ग्रंथ प्रकाशित हैं।

इनके अलावा ज्योतिष, वास्तुविज्ञान, भारतीय संस्कृति, आदि से संबंधित कोई 20 ग्रंथ प्रकाशित हैं। अन्य ग्रंथ भी 20 से अधिक है। कुल मिलाकर आपके 100 से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

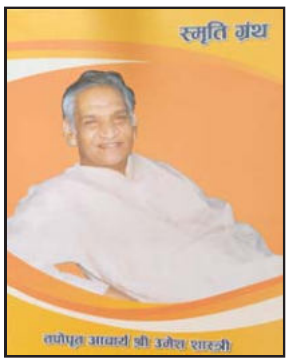

स्मृति ग्रंथ को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में 'तपोपूत की जीवन-गाथा' विषय पर 10 अध्याय है जिनमें शास्त्रीजी के जन्म, परिवार, शिक्षा, विवाह, नौकरी, स्वास्थ्य, महाप्रयाण आदि का परिचय है। 'रचनात्मक अवदान' शीर्षक में कुल 13 अध्याय है जिनमें शास्त्रीजी के जीवन के विविध प्रसंगों, कार्यों आदि का तथ्यात्मक लेकिन भावपूर्ण भाषा में परिचय है। 'आशीर्वचन एवं भावांजलि' शीर्षक में कुल 60 आलेख है। दूसरे भाग में कुल 17 आलेख हैं। इनमें प्रमुख रूप से शास्त्रीजी के कृतित्व का मूल्यांकन है।

शास्त्रीजी ने एक कठिन और विरल प्रयास करते संस्कृत के प्रसिद्ध नाटक 'मुद्राराक्षस' के कथानक पर संस्कृत भाषा में 'मुद्राराक्षस' नाम से ही एक फिल्म बनाई है। राजस्थान में निर्मित यह संस्कृत की प्रथम फिल्म है। वस्तुत: शास्त्रीजी का जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व इतना विशाल है कि उनके इन सभी पक्षों का मूल्यांकन करने के लिये अलग-अलग ग्रंथों की रचना अपेक्षित है, तथापि, इस स्मृति ग्रंथ में सम्पादक ने इन तमाम प्रसंगों को 'गागर में सागर' भर कर प्रस्तुत कर दिया है, जो उमेशजी शास्त्रीजी की विद्वता को रेखांकित करता है।

इस स्मृति ग्रंथ के सम्पादक डॉ. देव कोठारी, प्रबन्ध सम्पादक प्रो. उत्तमचन्द जैन एवं राजीव शर्मा हैं। पृ. 356 तथा मूल्य 1100 रूपये हैं। प्रकाशक तपोपूत आचार्यश्री उमेश शास्त्री स्मृतिग्रंथ प्रकाशन समिति एवं व्यास बालाबक्ष शोध संस्थान, जयपुर (राज.) है। **-डॉ. लक्ष्मीलाल वैरागी**

कर्ण की धरती पर नाथ परम्परा का प्रादुर्भाव

- दिनेश रावत -

देवभूमि उत्तराखण्ड के सीमांत जनपद उत्तरकाशी के पश्चिमी छोर पर अवस्थित रवाँई क्षेत्रान्तर्गत सीगतूर पट्टी में कर्ण आराध्य देव के रूप में पूजित—प्रतिष्ठित हैं। इसी पट्टी के देवरा गाँव में कर्ण का मंदिर बना है। मंदिर में कर्ण के अतिरिक्त महादेव शिव, शल्य व देवी रेणुका की मूर्तियाँ विराजमान हैं। सीगतूर पट्टी में गैंचवाणगाँव, दड़गाणगाँव, लुदराला, कुनारा, पोखरी, पासा, पैंसर, सुंचाणगाँव, हल्टाड़ी व गुराड़ी ग्राम आते हैं। सभी गाँव साठी व पानशाही दो दोथों में बंटे हैं। साठी थोक में मूलत: गैंचवाणगाँव व दड़गाणगाँव तथा पानशाही थोक में लुदराला, कुनारा, पोखरी, पासा, पैंसर व गुराड़ी शामिल हैं। सुंचाणगाँव व हल्टाड़ी को ग्राम निकटता की दृष्टि से साठी थोक में ही शामिल किया गया है।

बाजगी, पुजारी, माली, ठाणी, वज़ीर और खूंद कर्ण के मुख्य खेंदार या कर्त्ताधर्त्ता हैं। सबके कार्य एवं दायित्व पीढ़ियों से तय हैं। सुंचाणगाँव निवासी कर्ण महाराज के खूंद हैं। खूंद का आशय वीर-भड़ या योद्धाओं से होता है। सुंचाणगाँव वालों को 'कट्यारी खूंद' भी कहते हैं। कट्यारी खूंद यानि ऐसे वीर-भड़ जो देवता के लिए कटने—मरने को भी तैयार रहते हैं।

कर्ण मंदिर की पहरेदारी एक साधुवेशधारी व्यक्ति के जिम्मे हैं। कर्ण सेवा-सत्कार व सुरक्षा में नजर आने वाला भगवा वस्त्रधारी, लम्बी जटा व दाढ़ी पाले, माथे पर भस्म रमाएं, हाथों में चिमटा, कानों में कुण्डल धारण कर धुनी रमाए बेठा साधु कोई अनजान-अपरिचित नहीं बल्कि इसी क्षेत्र का ऐसा महात्यागी है जो देवाशीष के चलते स्वयं की घर-गृहस्थी, माता-पिता, बाल-बच्चों का परित्याग किए हुए है, जिसे लोकवासी नाथ के रूप में जानते-पहचानते हैं।

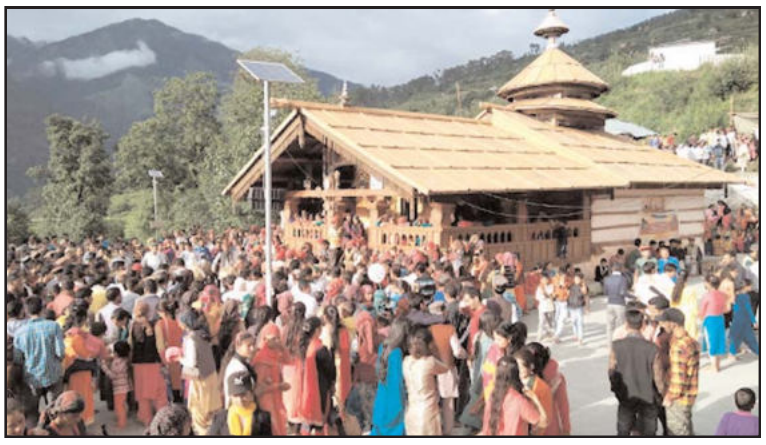

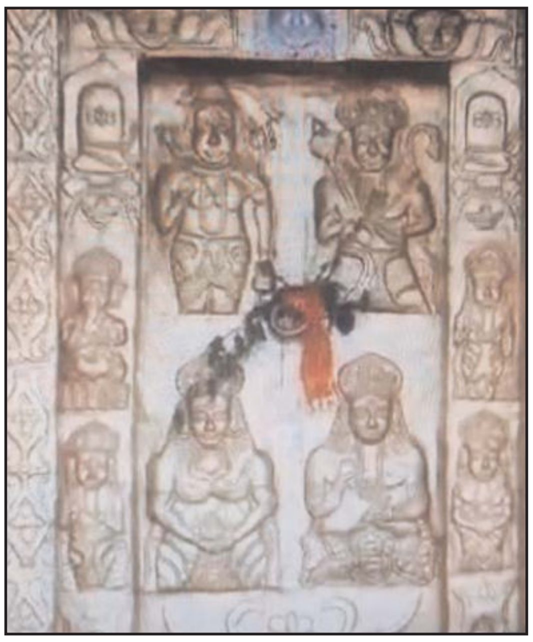

दूरस्थ एवं सीमांत क्षेत्र में नाथ परम्परा की प्रादुर्भाव की कथा-गाथा कुछ इस प्रकार है। वर्षों पूर्व एक बार सोमेश्वर आधिपत्य वाले क्षेत्र के कुछ लोगों ने कर्ण मंदिर पर धाड़ा लगा लिया था और विजय प्रतीक के रूप में वे कर्ण मंदिर का कलश उतार कर ले गए थे। कर्ण आधिपत्य वाले क्षेत्रवासियों के लिए वह किसी अपमान से कम नहीं था। अपने आराध्य देव के मंदिर पर पड़े इसी धाड़े का बदला लेने के लिए सुंचाणगाँव का एक भड़ सोमेश्वर आधिपत्य वाले क्षेत्र की ओर निकल पड़ा और मौका पाकर मंदिर से सोमेश्वर देवमूर्ति को ही उठा लाया था। भड़ प्रतिशोध की ज्वाला से इस कदर झुलस रहा था कि उसने सोमेश्वर की मूर्ति को किसी देवस्थल पर न रखकर सीधे अपने ओबरे (गौशाला) में ले जाकर मवेशियों संग खूंटे पर बांध दिया। धूप-दीप के स्थान पर मूर्ति के सामने चारा-पत्ती काट कर डाल दी। देव प्रतिमा का अपमान-अनादर होने पर उसे सोमेश्वर देवदोष का भागी बनना पड़ा। फलत: शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक रूप से परेशान रहने लगा। परेशानियाँ अत्यधिक बढ़ने पर उसने निवार्णार्थ अपने आराध्य देव कर्ण महाराज से विनती की तो कर्ण ने उसे अपनी शरण में आने को कहा और वचन दिया कि जब तक तुम मेरी सेवा-शरण में रहोगे तुम्हारा कुछ भी नहीं होगा। कर्ण महाराज का वचन पाकर उसने घर-परिवार-गृहस्थी का परित्याग किया और स्वयं को कर्ण महाराज की सेवा-शरण में इस कदर समर्पित कर दिया कि वह सदा के लिए कर्ण का ही होकर रह गया।

संयास मार्ग में सद्गति प्राप्ति के लिए गुरू ज्ञान भी आवश्यक था इसलिए उसने लाखामण्डल क्षेत्र में धुनी रमाए गुरू गोरखनाथ के किसी शिष्य के पास जाकर गुरूज्ञान प्राप्त किया। कुण्डल धारण किए और भगवा वस्त्र पहनकर कर्ण मंदिर में ही धुनी रमा दी। दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात वह भी नाथ कहलाया और धीरे—धीरे उसके वंशज भी। इसी त्याग, सेवा व समर्पण के चलते उसके वंशज भी देवदोष से मुक्त हुए। परम्परा पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ती गयी और वर्तमान तक यथावत् बनी हुई है। प्रत्येक पीढ़ी में कोई एक व्यक्ति घर-गृहस्थी का परित्याग करके गुरुज्ञान प्राप्त कर स्वयं को कर्ण की सेवा में समर्पित करता है। नाथों के इस कुटुम्ब में से घर-गृहस्थी का परित्याग कर दीक्षा प्राप्त करने वाला नाथ ही दर्शनीनाथ कहलाता है।

कर्ण आधिपत्य वाले सीगतूर क्षेत्र में मलुकनाथ पहले दर्शनीनाथ हुए। इसलिए नाथ परम्परा की शुरुआत का श्रेय भी इन्हें ही जाता है। मलुकनाथ के पश्चात शिवनाथ, धन्नीनाथ, रामनाथ, देवीनाथ, हरिनाथ व कैलाशनाथ क्रमश: अब तक के कुल सात दर्शनीनाथ हुए हैं।

दर्शनीनाथ जहाँ कर्ण महाराज का सेवादार या रक्षक बनकर सदैव मंदिर में ही धुनी रमाए बैठा रहता है तो शेष परिजन भी यूँ तो सामान्य गृहस्थ जीवन जीते हैं लेकिन गुरु वचनों का अनुकरण करते हुए प्रति वर्ष पौष मास में 15 गते को जोगी वेश बनाकर, हाथों में चिमटा, कमण्डल लिए घर से पट्टी के अन्य ग्रामों में फेरी के लिए निकल पड़ते हैं। 15 गते पौष से लेकर माह की समाप्ति तक संबंधित गाँव में ही धुनी रमाए रहते हैं। प्रतिदिन भोर में प्रत्येक घर में फेरा देते हुए सस्वर गोपीचंद व भरथरी की कथा—गाथा गाते-दोहराते हुए ग्राम खुशहाली की कामना करते हैं। उनके द्वारा गाई जाने वाली गाथाओं के स्वर कुछ इस प्रकार होते हैं–

गुरु गोरखनाथजी महाराज की जय, इष्टदेव कर्ण महाराज की जय / हो रे! पइली-क परअ बच्चा कोई सकल संसार / हो रे! दोसरो परअ कोई रोगी, कोई भोगी / तीसरो परअ बच्चा कोई चौर की जारअ / हो रे! चौथ परअ बच्चा कोई राजा भरतरी जोगी / जतिया गरु गोरखनाथ जी राजन जोगी सूरा योग सूरा यौवन।

अर्थात पहले प्रहर में बच्चे पूरा सकल संसार जगा होता है। दूसरे पहर में कोई रोगी और कोई भोगी। तीसरे प्रहर में बच्चे कोई चोर और जार ही जगता है। चौथे प्रहर में बच्चा कोई राजा भरतरी जोगी। ग्रामवासी उन्हें दान-दक्षिणा देते हैं। संक्रांति के दिन वे सभी अपने घरों को लौट आते हैं जबकि दर्शनीनाथ के खाने-पीने का इंतजाम मंदिर में ही समूचे क्षेत्र द्वारा किया जाता है। नाथ परम्परा के सात दर्शनीनाथों में से सातवें और वर्तमान दर्शनीनाथ कैलाशनाथ से पूर्व सभी लाखामण्डल के समीप रहने वाले गुरू गोरखनाथ के शिष्य से गुरू ज्ञान प्राप्त करते रहे तो कैलाशानाथ ने कमलेश्वर मंदिर पुरोला के योगी से ही गुरूज्ञान प्राप्त कर परम्परा को जारी रखा है।

विक्रम संवत् की दूसरी तथा युधिष्ठिर संवत् की पांचवीं सहस्राब्दी पूरी होगी अगले वर्ष

- नन्दकिशोर शर्मा -

राजपूतकाल, मुगलकाल और अंग्रेजीकाल में अलग-अलग शासकों के कारण कालगणना में आया अंतर। मुगलकाल में बादशाह अकबर द्वारा जब 'दीने इलाही' संवत् चलाया गया उस समय शक और हिजरी का अंतर 500 वर्ष कर दिया गया। वर्तमान में हिजरी सन् 1442 और शक संवत् 1942 चल रहा है। इसमें 500 वर्षों का अंतर है। 1442 में 500 जोड़ते हैं तो 1942 आते हैं। यह 1942 शक संवत् है। शक और विक्रम का अंतर 135 वर्ष का है। जब हम 1942 में 135 जोड़ते हैं तो 2077 आता है। शक और ईस्वी का अंतर 78 वर्ष का है। इस प्रकार जब हम विक्रम संवत् 2078 में 78 घटाते हैं तो यह 2000 वर्ष पूर्ण करता है। आजादी के उपरान्त विक्रम संवत् की उपेक्षा कर ईस्वी सन् को अंगीकार किए जाने से कालगणना में यह अक्षम्य अन्तर आया है और इससे समूची कालगणना दुष्प्रभावित हुई है।

मैं भारत की पश्चिमी सीमा पर राजस्थान के सुनहरे नगर जैसलमेर का निवासी हूं। कोरोनाकाल में तनोटमाता की कृपा से मैंने मरुप्रदेश की अनसुलझी गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास किया।

देश के आजाद होने के 75 वर्ष बाद भी हम मुगलों द्वारा चलाये हिजरी सन् और अंग्रेजों द्वारा चलाये ईस्वी सन् की कालगणना से इतिहास की कालगणना कर रहे हैं। आज के आधुनिक इतिहासकार इन्हीं कालगणनाओं को मानकर पुस्तकें लिख रहे हैं। पाठ्यक्रमों में उन्हीं संवतों की कालगणना के आधार पर पाठ्यक्रम और जिलों के गजेटियर बना रहे हैं लेकिन इस पर कभी विचार नहीं किया कि इन संवतों में अंतर क्यों आया? आईये उस पर हम विश्लेषण करें।

युधिष्ठिर संवत् 3044 भागवत पुराणों आदि ग्रंथों के आधार पर प्रारंभ होना माना गया। इसे कलयुगी संवत् भी कहा जाता है। जब पाण्डव राजा युधिष्ठिर चक्रवर्ती सम्राट बना तब उसके नाम और यश को स्थाई रखने के लिये इस संवत् को प्रारंभ किया गया था। इसी दिन से कलयुग का प्रारंभ हुआ। इस समय विक्रम संवत 2078 चल रहा है। 3044 में जब हम 2078 जोड़ते हैं तो 5122 युधिष्ठिर संवत् आता है।

हमारे देश में मुख्य तीन संवत् चलते थे- पहला युधिष्ठिर संवत, जिसका प्रारंभ 3044 में माना जाता है। दूसरा विक्र म संवत् जो 57 वर्ष अर्थात् 2966 युधिष्ठिर संवत् के 57 वर्ष बाद महाराजा विक्रमादित्य ने प्रारंभ किया। इनके बाद शालिवाहन ने अपने नाम से 78 वर्ष बाद शालिवाहन संवत् चलाया। इस प्रकार शालिवाहन विक्रम के 78 वर्ष बाद हुए। इस कारण 57 में 78 जोड़ने पर 135 वर्ष आता है। जो अभिलेखों में दिये हुए संवतों से भी प्रमाणित होता है।

इस्लाम के भारत में प्रवेश होने के बाद हिजरी संवत् का प्रचलन हुआ। हिजरी संवत् का साक्ष्य बेरावल के लेख में मिलता है। कर्नल टॉड ने गुजरात के चौलुक्य राजा अर्जुनदेव के समय के बेरावल नामक स्थान से एक लेख का पता लगाया। (एनल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, भाग 1, पृ. 705)।

बेरावल के लेख के अनुसार विक्रम संवत् 1320 में हिजरी संवत् 662 घटाने पर 1320-662 = 658 आता है। अत: विक्रम संवत् और हिजरी संवत् का अंतर 658 वर्ष का सिद्ध होता है। विक्रम और शक संवत् का 135 वर्ष का अंतर है। इस प्रकार वि. सं. 658 में 135 घटाने पर 523 शक संवत् आता है।

जैसलमेर से 17 किलोमीटर उत्तर में नेड़ाई के मार्ग पर ब्रह्मकुण्ड के पास बैशाखी तीर्थ है। इसके पास स्थित प्राचीन स्तम्भ पर एक अभिलेख लिखा है- संवत् 101 साका 947 वैशाख मासे शुक्लपक्षे सप्तयाम् 7 तिथौ बुधवारे पुष्यान नक्षत्रे।

मिस्टर एन्थोनी ने लिखा है, ज्योतिष के अधिकारिक विद्वानों द्वारा इन संवतों की जाँच किये जाने पर ई. सन् के अनुसार तिथि, वार, नक्षत्र आदि सही नहीं पाये गये। यह इस तथ्य की पुष्टि करता है कि जैसलमेर की ख्यातों, तवारिखों आदि में जो संवत् लिखे गये हैं, उन संवतों में अंतर है।

मिस्टर एन्थोनी के अनुसार 947 शाका 78 शाका व ईस्वी के अन्तर को जोड़ने पर 1025 आता है। 1025 ई. को उपर्युक्त तिथि, वार नक्षत्र आदि सही नहीं मिलते हैं। जब 1025 ई. में से 100 घटाने पर 925 ई. में यह ज्योतिष पंचाग से सही मिल जाता है।

इससे यह प्रमाणित हो गया है कि शक और ईस्वी का 100 वर्ष का अन्तर है। साथ में यह भी सिद्ध होता है कि ईस्वी सन् से विक्रम संवत् 22 वर्ष आगे चलता था। 925 में 22 जोड़ते हैं तो 947 आता है जो अभिलेख से मिल जाता है। जब 1025 में 22 जोड़ते हैं तो 1047 आता है और 1047 में 925 घटाते हैं तो 122 आता है। इस प्रकार युधिष्ठिर संवत् 122 वर्ष आगे चला जाता है। (द्रष्टव्य मि. एथोनी ओबेराय द्वारा लिखित क्रोनोलॉजी ऑफ थार, 1996, पृ. 17)

इसका सर्वाधिक नुकसान राजस्थान को हुआ है। उसने अपना इतिहास, भाषा, संस्कृति, अंक लेखन, शिक्षा की रीति-नीति आदि काफी कुछ को बदल दिया, जो कि राजस्थान की मौलिक और शाश्वत परम्परा से जुड़े हुए मानक थे। यदि हमने इस पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाली पीढ़ियां राजनैतिक दलों और जनप्रतिनिधियों को कभी क्षमा नहीं करेंगी।

अपने क्षेत्र, राज्य और देश के इतिहास की कालगणना को सही करने की आवश्यकता है। इतिहास हमें हमारे पूर्वजों के गौरवशाली घटनाओं, प्रसंगों, शौर्य-पराक्रम की गाथाओं आदि से परिचित करवाता है और हमें गौरवान्वित करता है। इससे आने वाली पीढ़ियां अपने पूर्वजों के अनुभवों को जीवन में उतार कर सामाजिक समरसता के साथ आगे बढ़ती हैं। यह भारतवर्ष के भविष्य और देश-दुनिया के इतिहास के लिए शुभ संकेत होगा।

मुगलकाल में बादशाह अकबर द्वारा जब 'दीने इलाही' संवत् चलाया गया उस समय शक और हिजरी का अंतर 500 वर्ष कर दिया गया। वर्तमान में हिजरी सन् 1442 और शक संवत् 1942 चल रहा है। इसमें 500 वर्षों का अंतर है। 1442 में 500 जोड़ते हैं तो 1942 आते हैं। यह 1942 शक संवत् है। शक और विक्रम का अंतर 135 वर्ष का है। जब हम 1942 में 135 जोड़ते हैं तो 2077 आता है। शक और ईस्वी का अंतर 78 वर्ष का है। इस प्रकार जब हम विक्रम संवत् 2078 में 78 घटाते हैं तो यह 2000 वर्ष पूर्ण करता है।

1442 हिजरी में जब हम 658 जोड़ते हैं तो यह 2000 वर्ष आता है। मुगलकाल में जब हिजरी और शक संवतों में सुधार किया गया तो उस समय 1442 हिजरी संवत और शक संवत का अंतर 500 वर्ष निर्धारित किया गया।

शक और ईस्वी का अंतर 78 वर्ष का है। जब हम 1942 में 78 जोड़ते हैं तब ईस्वी सन् 2020 आता है। ईस्वी और विक्रम का अंतर 56 वर्ष का है। आजादी के उपरान्त विक्रम संवत् की उपेक्षा कर ईस्वी सन् को अंगीकार किए जाने से कालगणना में यह अक्षम्य अन्तर आया है और इससे समूची कालगणना दुष्प्रभावित हुई है।

कालगणना के अंतर की मूल वजह अंग्रेजों द्वारा अंग्रेजी काल ईस्वी सन् का प्रयोग करना तथा देश के आजाद होने के बाद 1957 में वि.सं. के स्थान पर ईस्वी सन् को संविधान में मान्यता देने के साथ ही भारतीय अंकों के स्थान पर अंग्रेजी अंकों को मान्यता देने के बाद भारतीय इतिहासकारों ने स्थानीय संवतों की उपेक्षा की और कालगणना के मूल मर्म तथा शाश्वत गणना को दरकिनार कर ईस्वी सन् का प्रयोग किया। इस थोपे गए ईसवी सन् ने सब कुछ बिगाड़ा कर दिया। इसी कारण भारत के इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता है।

लेखक वही बड़ा जिसे पाठक बार-बार पढ़े

जयपुर (वि.)। प्रेस क्लब ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली के सभागार में डॉ. लालित्य ललित के नए व्यंग्य संग्रह 'पाण्डेय जी की रापचिक दुनिया' व्यंग्य संग्रह का लोकार्पण करते वरिष्ठ व्यंग्यकार फारूक आफरीदी ने कहा कि एक व्यंग्यकार के नाते डॉ. लालित्य ललित सृजन के प्रति संकल्पबद्ध हैं। वे अपने नियमित लेखन से पाठकों से रूबरू होते हैं जो व्यंग्य के प्रति उनके जज्बे को दर्शाता है। नियमित लेखन एक साधना है, यह एक रियाज है जिससे लेखन समृद्ध होता है। आफरीदी ने कहा कि इंडिया नेटबुक्स से सद्य प्रकाशित व्यंग्य संग्रह 'पाण्डेय जी की रापचिक दुनिया' उनका 26वां व्यंग्य संग्रह है जो अपनेआप में एक बड़ी उपलब्धि है। इस संग्रह में उन्होंने मध्यमवर्गीय जीवन की दुविधाओं, दु:ख-सु:ख और जीवन संघर्ष को पूरी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है।

अध्यक्षता करते प्रताप सहगल ने कहा कि लेखक वही बड़ा होता है जिसे पाठक बार-बार पढ़े और जिसके नए अर्थ निकलते हों। मुख्य अतिथि डॉ. प्रेम जनमेजय थे। प्रभात गोस्वामी, सुनीता सानू और रमेश कुमार ने भी विचार व्यक्त किए। इण्डिया नेटबुक्स के महानिदेशक डॉ. संजीव कुमार ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में राजेश्वरी मंडोरा, डॉ. मनोरमा कुमार, कामिनी मिश्रा, सोनी लक्ष्मी राव एवं विनय कुमार की भी विशेष उपस्थिति रही। लोकसभा के संपादक एवं कवि रणविजय राव ने कार्यक्रम का संचालन किया।

भारत का जल संबंधी ज्ञान पूरे संसार के लिए अजूबा

उदयपुर (वि.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय और इंटैक (उदयपुर चैप्टर) के संयुक्त तत्वावधान में 'भारत की जल विरासत' विषय पर 27 अगस्त को आयोजित राष्ट्रीय वर्चुअल कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन अवसर पर प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने कहा कि दुनिया इस बात पर ताज्जुब कर सकती है कि भारत के पास जल विद्या पर शताधिक ग्रंथों और विषयों का विस्तार मिलता है। संसार में मूलतत्त्व के रूप में जल को पहले-पहल सम्मान मिला! वैदिक काल से ही जल का विस्तृत ज्ञान मिलता है। सरस्वती जैसी सभ्यता की जननी नदी क्या लुप्त हुई, दृष्टाओं ने जल की तीन स्थितियां देखीं -1. दिव्य जल, 2. भौम जल और 3. पाताल जल। यह जल कब, कहां मिलेगा? इस पर सारस्वतों, गर्ग, पाराशर, भारद्वाज और भार्गवों ने अपने-अपने मत दिए।

सारस्वत ने पाताल पानी पाने के लिए, जल शिराओं को खोजने की विधियां लिखीं। पराशर, गर्ग आदि ने मेघ बनने और उनके बरसने की नक्षत्र आधारित विश्वस्त गणना दी जिसको वृष्टि विज्ञान के नाम से जाना गया और जलस्रोत जिनको 'जल की खेती' करने के साधन के रूप में बनाया गया, के विषय में सूत्रधार, विश्वकर्मा संततियों ने इतना लिखा कि धरातल से रसातल तक अनेक चिरस्थाई निर्माण हुए! रस यानी पानी, रसातल यानी पानी का तल! अब वह समय आ गया है जबकि हम हमारे वैज्ञानिक ग्रंथों की प्रतिष्ठा और उन पर विमर्श करें। उन्होंने कहा कि भविष्य में यदि कभी मानव के वैश्विक कर्त्तव्य तय हों तो जल की उपलब्धि, शुद्धि और बचत को प्राथमिक दायित्व में शामिल किया जाना चाहिए।

डॉ. जुगनू ने बताया कि मेवाड़ के प्रमुख ग्रंथ विश्ववल्लभ में जल की विस्तृत चर्चा की गई है। प्राचीन भारतीयों के पास अरहट नामक यंत्र भी था जिससे पानी को गहराई से ऊपर लाया जाता था। भारतीयों को जल की शिराओं का ज्ञान था जिसके माध्यम से वे वैज्ञानिक रूप से जल स्रोतों का निर्माण करते थे।

मुख्य अतिथि डॉ. राजेंद्रसिंह ने कहा कि जल संरक्षण के परंपरागत स्रोतों को हानि पहुंचाने से भारत के 17 राज्यों में अकाल और 9 राज्यों में बाढ़ आती है। वर्तमान शिक्षा में मानवीय एवं प्राकृतिक संवेदना को ढूंढना होगा जिससे प्रकृति का संरक्षण, संवर्धन संभव हो। विशिष्ट अतिथि प्रो. रविन्द्रसिंह बिष्ट ने बताया कि रानी की वाव और धोलावीरा देश में जल स्थापत्य और जल शहर के रूप में जाने जाते हैं। विशिष्ट अतिथि मनु भटनागर तथा कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. ललित पांडे थे। कार्यक्रम में डॉ. पीयूष भादवीया, प्रो. दिग्विजय भटनागर एवं गौरव सिंघवी मौजूद थे।

बाजार / समाचार

देवेंद्रसिंह शक्तावत द्वारा 'प्रीति शक्तावत' को टिकट मिलने पर निर्दलीय चुनाव लड़ने का ऐलान

उदयपुर (वि.)। देहात जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष तथा नगरपालिका भींडर के पूर्व अध्यक्ष देवेन्द्रसिंह शक्तावत ने निर्वाचित विधायक स्व. गजेंद्रसिंह शक्तावत की पत्नी प्रीति शक्तावत की वल्लभनगर विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस पार्टी के टिकट की दावेदारी का विरोध करते मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को लिखे पत्र में कई गंभीर आरोप लगाते हुए लिखा कि अगर कांग्रेस पार्टी उनके पिता स्व. गुलाबसिंह शक्तवत के आदर्शों और उसूलों के साथ कांग्रेस की रीति-नीति का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति को उम्मीदवार बनाने की मंशा रखती है तो वे कांग्रेस पार्टी छोड़कर निर्दलीय खड़े होकर चुनाव लड़ेंगे। उदयपुर में आयोजित प्रेसवार्ता में देवेन्द्रसिंह शक्तावत ने यह जानकारी दी। प्रेसवार्ता में ब्लॉक अध्यक्ष (भींडर) डॉ. कमलेन्द्रसिंह बेमला, ब्लॉक अध्यक्ष (वल्लभनगर) सुनील कूकड़ा, नगर अध्यक्ष (भींडर) पूरण व्यास सहित कई वरिष्ठ कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित थे।

शक्तावत ने कहा कि वे कांग्रेस परिवार के निष्ठावान, समर्पित सिपाही हैं। वल्लभनगर विधानसभा सीट उनके पिताश्री स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व गृहमंत्री गुलाबसिंह शक्तावत की कर्मस्थली रही। उनके देहावसान के बाद पार्टी ने मेरे अनुज गजेंद्रसिंह शक्तावत को 2008 में कांग्रेस का उम्मीदवार बनाया लेकिन उसके बाद वल्लभनगर विधानसभा सीट पर कांगेस पार्टी का ग्राफ निरन्तर गिरता गया जिससे 2013 के विधानसभा चुनाव में हार का मुंह देखना पड़ा और 2018 के चुनाव में पार्टी की प्रचंड लहर के बावजूद 30 प्रतिशत मत पाने में ही सफल हो पाए।

शक्तावत ने आरोप लगाया कि वल्लभनगर क्षेत्र के करीब 150 उचित मूल्य की दुकानदारों से मंथली वसूली की जाती थी जिससे आमजन, गरीब, मजदूर वर्ग को राशन सामग्री पाने में बहुत दिक्कतें हुईं। वर्ष 2018 में राजस्थान सरकार को निजी स्वार्थ की खातिर गजेन्द्रसिंह द्वारा सरकार गिराने के प्रयास में खुलकर सहयोग किया गया। गजेन्द्रसिंह की पत्नी द्वारा मुख्यमंत्री एवं सरकार के खिलाफ मीडिया में अनर्गल बयानबाजी की गयी जिससे कार्यकर्ताओं में आक्रोश एवं बदलाव की भावनाए जागृत हुईं। अधिकारियों के स्थानान्तरण भी लेन-देन से किये जाने के आरोप से कार्यकर्ताओं में रोष एवं आक्रोश पनपा। फलस्वरूप तत्कालीन ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष मेघराज सोनी सहित कई कांग्रेसजन पार्टी छोड़कर अन्य पार्टी में सम्मिलित हो गए।

देवेन्द्रसिंह शक्तावत ने कहा कि निर्वाचित विधायक ने 2018 के बाद जनता द्वारा चुनी हुई राज्य सरकार गिराने का प्रयास किया। गजेन्द्रसिंह के अधिकतर समय बीमार रहने पर उनकी धर्मपत्नी प्रीति कुंवर पर अधिकारियों से चौथ वसूली के आरोप लगे। मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में देवेन्द्रसिंह शक्तावत ने बताया कि उनका लक्ष्य विधायक बनना नहीं, जनता की सेवा करना एवं भ्रष्टाचार मुक्त वल्लभनगर विधानसभा बनाना है। उनका विरोध व्यक्ति से नहीं, व्यवस्थाओं से है। उन्होंने दावा किया कि दिल में कई गहरे राज छुपे हैं जिनके लिए मुख्यमंत्री यदि उचित समय दें तो उनका खुलासा किया जा सके।

तीरंदाजों को तराशेगा हिन्दुस्तान जिंक

उदयपुर (वि.)। फुटबॉल के बाद अब हिंदुस्तान जिंक राजस्थान के तीरंदाजों को भी अवसर देकर तराशेगा। जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि राज्य में इस खेल को फिर से जीवंत करने के उद्देश्य से, वेदांता-हिंदुस्तान जिंक अब अपने जिंक फुटबॉल कार्यक्रम की तरह अलग-अलग आयुवर्ग के बच्चों के लिए उदयपुर में एक अत्याधुनिक तीरंदाजी प्रशिक्षण अकादमी स्थापित करने की योजना बना रहा है। उन्होंने कहा कि राजस्थान का तीरंदाजी में का समृद्ध इतिहास रहा है, जो भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान रखता है। पद्मश्री से सम्मानित तीरंदाज लिंबाराम उदयपुर जिले से हैं।

गीतांजली में लगी 256 स्लाइस सीटी स्कैन मशीन

- राजस्थान में यह सुविधा देने वाला पहला हॉस्पिटल -

उदयपुर (वि.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के रेडियोलोजी विभाग में एडवांस डायग्नोस्टिक टेक्नोलॉजी में 256 स्लाइस सीटी स्कैन रिवॉल्यूशन फ्रंटियर ड्यूल एनर्जी स्पेक्ट्रल मशीन का अनावरण मुख्य अतिथि गीतांजली ग्रुप के वाइस चेयरमैन कपिल अग्रवाल व वरिष्ठ अतिथि एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल द्वारा किया गया। गीतांजली मेडिकल कॉलेज राजस्थान का एकमात्र ऐसा निजी मेडिकल कॉलेज है जहां ये एडवांस सुविधा उपलब्ध है। इसके लिए कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लगेगा। अनावरण अवसर पर वाइस चांसलर डॉ. एफ. एस मेहता, डीन डॉ. नरेंद्र मोगरा, प्रिंसिपल पेरामेडिकल डॉ. डी. एल. डाड, रजिस्ट्रार भूपेंद्र मंडलिया, सीईओ प्रतीम तम्बोली, रेडियोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. ए. सी. बसेर, डॉ. रविंद्र कुंडु, डॉ. सीताराम बारठ, डॉ. हरीराम जाट, डॉ. वीरेंद्र मीणा मौजूद रहे।

बूस्ट का नया टीवीसी

उदयपुर (वि.)। हैल्थ फूड ड्रिंक ब्रांड्स बूस्ट ने नया अभियान प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य लड़कियों एवं क्रिकेट के प्रति स्थापित रूढ़ियों को तोड़ना है। नए बूस्ट अभियान का उद्देश्य उन मानसिकताओं पर रोशनी डालना है, जो खेल, खासकर क्रिकेट खेलने के मामले में लड़कियों का दृष्टिकोण बनाती हैं।

इस अभियान में एम.एस. धोनी के साथ युवा एथलीट एक खिलाड़ी में प्रतिभा एवं स्टेमिना के प्रभाव पर रोशनी डालेंगे। धोनी टेनिस कोर्ट में क्रिकेट खेलते हुए मुख्य किरदार को देखते हैं, जिसे देखकर वो आश्चर्यचकित रह जाते हैं। धोनी के साथ आए लड़के मजाक बनाते हुए कहते हैं कि क्रिकेट लड़कियों का खेल नहीं। इसके बाद वह युवा लड़की एक्शन में आ जाती है और बॉल हाथ में लेकर धोनी का विकेट गिरा देती है। इससे साबित होता है कि खेल लिंग से नहीं, बल्कि दृढ़ता, धैर्य एवं स्टेमिना से तय होता है। एडवरटाईज़मेंट के अंत में धोनी और युवा लड़की बूस्ट पीते हुए दिखते हैं और ब्रांड की प्रतिष्ठित टैगलाईन 'बूस्ट इज़ द सीक्रेट ऑफअवर एनर्जी' आती है।

एमएस धोनी ने कहा कि मैं बूस्ट परिवार का हिस्सा बनकर बहुत उत्साहित हूँ। मैं इस ब्रांड से कई सालों से जुड़ा हुआ हूँ। युवा लड़कियां भी क्रिकेट खेलने का सपना देखती हैं इसलिए उन्हें यह खेल खेलने से मना नहीं किया जाना चाहिए।

राजस्थान विद्यापीठ विवि प्रदेश में तीसरे स्थान पर

उदयपुर (वि.)। इंडियन इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क द्वारा किये गये सर्वे में जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के डीम्ड विवि को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि 1987 में डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त यह संस्थान नेक द्वारा ए ग्रेड प्राप्त है। संस्था चिकित्सा के क्षेत्र में भी अपनी अहम भूमिका निभाते 13 करोड़ की लागत से निर्मित 120 बेड के हॉस्पीटल के अतिशीघ्र शुभारंभ की प्रतीक्षा में है।

डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि को डि.लिट्. की उपाधि

उदयपुर (ह. सं.)। उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी के प्रशिष्य डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ऑरियंटल हेरिटेज (खुला विश्वविद्यालय) कोलकाता ने डॉक्टर ऑफ़ लिटरेचर (डि.लिट्.) की उपाधि प्रदान की है। 'जैनविद्या के विकास में आचार्यश्री देवेन्द्रमुनिजी का योगदान' विषय पर डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि ने यह शोधकार्य डॉ. तेजसिंह गौड़ के निर्देशन में किया। उल्लेखनीय है कि मुनिश्री ने 2007 में मोहनलाल सुखाड़िया विवि से जैनविद्या और प्राकृत में एम.ए. कर 2010 में 'देवेन्द्राचार्य कृत कर्मविज्ञान: एक अध्ययन' विषय पर स्वर्ण-पदक के साथ पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी।

उदयपुर में दिखी दुर्लभ ग्रीन मुनिया

उदयपुर (वि.)। उदयपुर जिले के वल्लभनगर क्षेत्र में दुर्लभ प्रजाति की ग्रीन मुनिया देखी गई। फोटोग्राफर विधान द्विवेदी और देवेन्द्र श्रीमाली ने इसके फोटो व विडियो क्लिक किए। लाल चौंच वाली यह चिड़िया घास के मैदानों में मिलती है और गन्ने के खेतों को ज्यादा पसंद करती है।

चित्तौड़ा को लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर (वि.)। सूक्ष्म पुस्तिकाओं व कलाकृतियों के शिल्पकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा को नई दिल्ली के मेजिक बुक ऑफ रिकॉर्ड द्वारा लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया। संस्थान के चेयरमेन डॉ. सी. पी. यादव ने बताया कि पिछले दो दशक से चित्तौड़ा इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने 1151 विविध सामग्रियों के उपयोग से सूक्ष्म कलाकृतियों को नया आयाम दिया है। चित्तौड़ा को उदयपुर में यह अवार्ड वरिष्ठ पत्रकार विष्णु शर्मा 'हितैषी' ने प्रदान किया।

प्रो. भाणावत अधिष्ठाता एवं स्पोर्टस् बोर्ड के चेयरमैन बने

उदयपुर (वि.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अमेरिकासिंह ने लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत को छात्र कल्याण अधिष्ठाता पद एवं स्पोर्ट्स बोर्ड का चेयरमैन नियुक्त किया है। वाणिज्य महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. पी. के. सिंह एवं बैंकिंग एंड बिजनेस इकोनॉमिक्स के विभागाध्यक्ष प्रो. मुकेश माथुर की उपस्थिति में प्रो. भाणावत ने पूर्व छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. पूरणमल यादव से कार्यभार ग्रहण किया।

उल्लेखनीय है कि प्रो. भाणावत के अब तक 45 रिसर्च पेपर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जनरल्स में प्रकाशित हुए जिनमें से आठ रिसर्च पेपर को बेस्ट पेपर अवार्ड से नवाजा गया है। प्रो. भाणावत ने हाल ही में कार्बन टैक्सेशन पर रिसर्च प्रोजेक्ट संपन्न किया है। वे रुसा मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन भारत सरकार से प्रायोजित ब्लॉक चैन अकाउंटिंग रिसर्च प्रोजेक्ट के प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर के रूप में भी कार्य कर रहे हैं। लागत लेखांकन एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विषय पुस्तक के लेखक प्रो. भाणावत इंडियन अकाउंटिंग एसोसिएशन के राष्ट्रीय लेखांकन टैलेंट सर्च के राष्ट्रीय संयोजक और भारतीय लेखा परिषद उदयपुर शाखा के सचिव भी हैं।

भक्ति-ज्ञान-वैराग्य की त्रिवेणी है भागवत

- डॉ. पूरन सहगल -

जहां श्रीमद् भागवत कथा का गुणानुवाद होता है वह स्थान स्वत: तीर्थ बन जाता है। भागवत शब्द में ही त्रिवेणी तीर्थ निहित है। यथा 'भ' भक्ति, 'ग' ज्ञान, 'व' वैराग्य। ऐसा लगने लगता है मानो वह ज्योति स्वरूप परमात्मा हमारे भीतर विराजित हो गया हो।

जब मन निर्मल हो जाए तब भक्त को भगवान को ढूंढने या पुकारने की स्थिति समाप्त हो जाती है। शुकदेवजी परीक्षित से कहते हैं, 'जो अपने कानों से भगवान की कथा का मधुर अमृत ग्रहण करते हैं वे शुद्ध हो जाते हैं और ऐसे भक्तों को भगवान का सान्निध्य सहज ही प्राप्त हो जाता है। भागवत के गुणानुवादों का श्रवण आत्मसात करने से हम नवधा भक्ति का सहज पालन कर सकते हैं। ऋषिजनों ने कहा है यदि जन्म उत्सव है तो मृत्यु महोत्सव है। राम कथाओं में जहां जन्म के उत्सव से हम परिचित होते हैं वहीं भागवत में हमें मृत्यु के महोत्सव का आभास सहज ही ज्ञात हो जाता है।

महाकवि वेदव्यास ने परीक्षित के माध्यम से हमें, यह आभास करा दिया कि मृत्यु को किस प्रकार सहज रूप से स्वीकार किया जा सकता है। परीक्षित का अर्थ ही होता है एक ऐसा दिव्य पुरुष जिसकी सर्व प्रकार से परीक्षा ली जा चुकी है। सर्वप्रकारेण यह भागवत के गुणानुवादों का ही प्रभाव था कि परीक्षित मृत्यु के भय से मुक्त हो गए।

जब श्रीमद् भागवत के दिव्य श्लोकों के उच्चारण से उत्पन्न तरंगे वायुमंडल में विस्तीर्ण होती हैं तब उनके स्पर्श मात्र से हमारे समस्त विकार नष्ट होने लगते हैं। कोई श्रीमद् भागवत कथा जागृत अवस्था में सुने अथवा उंघते हुए सुने। रीझ कर सुने अथवा खीज कर सुने। मन से सुने बेमन से सुने लाभ तो सभी को अवश्य मिलता है। जैसा जिसका पात्र होता है। उतना पुण्य लाभ उसके पात्र में आ जाता है।

इन्हीं दिनों मनासा की उषागंज कॉलोनी के राम मंदिर में नरसिंह मंदिर के परम भागवत विद्वान पंडित गोविंदजी उपाध्याय द्वारा श्रीमद् भागवत कथा का गुणानुवाद हुआ। श्री पंजाबी समाज द्वारा प्रतिवर्षानुसार आयोजित इस पारंपरिक धर्मसभा में नगर के अनेक भक्तजनों ने कथा श्रवण का लाभ लिया।

नंदवाना स्मृति सम्मान प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी को

संभावना के अध्यक्ष डॉ. के. सी. शर्मा ने बताया कि वर्ष 2021 के लिए 'स्वतन्त्रता सेनानी रामचन्द्र नन्दवाना स्मृति सम्मान' प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी को उनकी चर्चित कृति 'केरल में सामाजिक आंदोलन और दलित साहित्य' पर दिया जाएगा। देशभर की कुल अट्ठाइस कृतियों के आधार पर चयन समिति ने इस कृति को श्रेष्ठतम घोषित किया। प्रो. तिवारी दिल्ली विश्वविद्यालय के देशबंधु कॉलेज में हिंदी के आचार्य हैं। **-डॉ. कनक जैन**

'एक्सिस कंजम्पशन ईटीएफ' लॉन्च

उदयपुर (वि.)। एक्सिस म्यूचुअल फंड ने अपना नया फंड- 'एक्सिस कंजम्पशन ईटीएफ' लॉन्च करने की घोषणा की। 30 अगस्त से खुला यह नया फंड ऑफर (एनएफओ) निफ्टी इंडिया कंजम्पशन इंडेक्स पर नज़र रखने वाला एक ओपन एंडेड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड है। नया फंड निफ्टी इंडिया कंजम्पशन इंडेक्स शेयरों के समूह में निवेश करके रिटर्न हासिल करने के लिए लंबी अवधि में धन सृजन से संबंधित सॉल्यूशन और लक्ष्य प्रदान करता है।

एक्सिस एएमसी के एमडी और सीईओ चंद्रेश निगम ने कहा कि एक्सिस एएमसी के रूप में हमारी पहचान एक जिम्मेदार फंड हाउस की है, जो बाजार में मजबूती से खड़ा है। हम अपने उपभोक्ताओं को विभिन्न किस्म के प्रोडक्ट्स प्रदान करने का प्रयास करते हैं जो संभावित रूप से गुणवत्ता से संचालित होते हैं और वर्तमान संदर्भ में दीर्घकालिक रिटर्न देने के साथ ही प्रासंगिक भी हैं। एक्सिस कंजम्पशन ईटीएफ के लॉन्च के माध्यम से, हमारा लक्ष्य अपने उपभोक्ताओं को एक ऐसा निवेश विकल्प प्रदान करना है, जिसमें विकास और मजबूत रिटर्न का प्रमाण हो।

स्कोडा का 'पीस ऑफ माइंड' कैंपेन शुरू

उदयपुर (वि.)। स्कोडा ऑटो इंडिया, अपने इंडिया 2.0 प्रोजेक्ट के तहत भविष्य की विभिन्न योजनाओं का खुलासा कर रहा है जो

सकारात्मक रूप से वास्तविकता में तब्दील होती जा रही है। इंडिया 2.0 प्रोजेक्ट के तहत विकसित किए गए पहले वाहन 'कुशक' को अच्छी प्रतिक्रिया मिली है।

स्कोडा इंडिया के उदयपुर शोरूम जय कार्स प्रा. लि. के अनिल बेनीवाल ने कहा कि कुशक के लॉन्च के साथ कंपनी ने उदयपुर में अपने ग्राहकों को अतिरिक्त लाभ और बेहतर अनुभव देने के लिए एक नया 'पीस ऑफ माइंड' कैंपेन भी शुरू किया है। 'पीस ऑफ माइंड' को चार स्तंभों - स्वामित्व की लागत, ग्राहकों की पहुंच, सहूलियत और बेहतर अनुभव के आधार पर तैयार किया है। इसके गैसोलीन इंजन की वजह से इंजन ऑयल की लागत में 32 प्रतिशत की कमी, स्पेयर पार्ट्स की कीमतों में अंतर और रिप्लेसमेंट इंटरवल्स में बढ़ोतरी हुई है, जिसके परिणामस्वरूप समग्र मेंटेनेंस कॉस्ट में 21 प्रतिशत तक की कमी आई है।

स्कोडा ऑटो इंडिया के ब्रांड निदेशक ज़ैक हॉलिस ने कहा कि हमारी इंडिया 2.0 स्ट्रेटजी में स्वामित्व अनुभव को बेहतर बनाना तथा ग्राहकों को खुशी देने पर फोकस करना शामिल है। 'पीस ऑफ माइंड' कैंपेन उसी दिशा में एक कदम है। हमारे कदम मेंटेनेंस कॉस्ट को कम कर अपनी पूरी रेंज में अग्रणी वारंटी प्रदान करते हैं, जो अपने प्रॉडक्ट्स और सर्विस ऑफरिंग्स में हमारे विश्वास को दर्शाता है। हम उदयपुर में ग्राहकों को बेहतरीन स्वामित्व अनुभव प्रदान करेंगे। यह ब्रांड पूरे भारत में 100 से अधिक शहरों में उपलब्ध होगा। इसके साथ स्कोडा ऑटो इंडिया में सेल्स और ऑफ्टर-सेल्स फेसिलिटीज सहित 170 से अधिक कस्टमर टचप्वाइंट्स होंगे। नया टर्बोचार्ज्ड स्ट्रैटिफाइड इंजेक्टेड इंजन कुशक को पॉवर देता है। हल्के, हाई-पॉवर, फ्यूल-एफिशिएंट हैं और 3- और 4-सिलेंडर मोटर्स पर चलते हैं, जो टर्बोचार्ज, डायरेक्ट फ्यूल और स्कोडा की बहुचर्चित डीएसजी ऑटोमैटिक यूनिट द्वारा संचालित होता।

इंदिरा आईवीएफ के 100वें केंद्र का उद्घाटन

उदयपुर (वि.)। इंदिरा आईवीएफ ने उत्तरप्रदेश के सुल्तानपुर और पंजाब के बठिंडा में दो नए केंद्रों के उद्घाटन के साथ देशभर में 100 केंद्र स्थापित करने की महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।

इंदिरा आईवीएफ समूह के फाउंडर और चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने कहा कि इंदिरा आईवीएफ ने एक दशक से भी अधिक अवधि का अपना सफर तय कर लिया है और इस दौरान संगठन ने अनेक जोड़ों की जिंदगी में खुशहाली लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह भारत की पहली सिंगल स्पेशलिटी आईवीएफ चेन है, जिसके बैनर तले 100 प्रजनन केंद्र खोले गए हैं।

इसने दूर-दराज के हिस्सों में भी आईवीएफ उपचार को पहुंचाने में कामयाबी हासिल की है। अपनी कोशिशों से इंदिरा आईवीएफ ने 2011 से अब तक 85,000 से अधिक जोड़ों को गर्भधारण करने में मदद की है और इस तरह एक मजबूत मार्केट लीडर और देश के सबसे भरोसेमंद सिंगल स्पेशलिटी फर्टिलिटी चेन के रूप में अपनी स्थिति को और बेहतर बनाया है।

'राइट टू हेल्थ' वाला राजस्थान पहला राज्य

जयपुर (वि.)। गहलोत ने ट्वीट कर लिखा- हमारा प्रयास है कि राजस्थान का कोई नागरिक इलाज के अभाव में कष्ट न पाए। भारत सरकार को

अब 'राइट टू हेल्थ' को संविधान के मूल अधिकारों में शामिल करना चाहिए और सभी नागरिकों को अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाना सुनिश्चित करना चाहिए। राजस्थान सरकार ने 'राइट टू हेल्थ' की परिकल्पना को साकार करने के लिए पहले चिकित्सा क्षेत्र में बड़े बदलाव किए। मुख्यमंत्री नि:शुल्क दवा योजना, मुख्यमंत्री नि:शुल्क जांच योजना और मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से पूरे प्रदेश में ओपीडी और आईपीडी का पूरा इलाज मुफ्त किया।

कोरोना काल में मिले अनुभवों के आधार पर अब 'राइट टू हेल्थ' पर फिर से बहस शुरू हो गई है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अब केन्द्र सरकार से राइट टू हेल्थ को संविधान के मूल अधिकारों में शामिल करने का सुझाव दिया है। गहलोत सरकार राजस्थान में भी राइट टू हेल्थ बिल लाने जा रही है। गहलोत ने ट्वीट कर 'राइट टू हेल्थ' की पैरवी करते हुए केन्द्र को सुझाव दिया है। राइट टू हेल्थ बिल लाने वाला राजस्थान पहला राज्य होगा।

कटारा सचिव, शर्मा संयोजक बने

उदयपुर (वि.)। आजादी के 75वें स्वतंत्रता दिवस का जश्न सालभर तक मनाने, आजादी के इतिहास में कांग्रेस के गौरवमयी योगदान को जन-जन तक

पहुंचाने के उद्देश्य तथा बांग्लादेश आजादी युद्ध में भारतीय सेना की जीत की 50वीं वर्षगांठ के कार्यक्रमों को वर्षभर आयोजित करने के लिए राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष महेन्द्रजीतसिंह मालवीया के संयोजन में प्रदेश स्तरीय समिति का गठन किया गया। इसमें विवेक कटारा व बाबूलाल जैन को सचिव, उदयपुर शहर में पंकज शर्मा व उदयपुर देहात में पूर्व विधायक हीरालाल दरांगी को संयोजक नियुक्त किया गया है।

खेलों में मानसिक स्वास्थ्य की अहम भूमिका : विजयलक्ष्मी दीदी

उदयपुर (वि.)। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद को श्रद्धांजलि एवं कोविड-19 के समय मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की जन जागृति के

मकसद से राष्ट्रीय खेल दिवस पर ब्रह्मा कुमारीज स्पोर्ट्स विंग (आरईएफ) की ओर से माउंट आबू से उदयपुर तक जागरूकता बाइक रैली निकाली गई। रैली का उदयपुर में बीके ज्ञान योग अनुभूति भवन प्रतापनगर पर भव्य स्वागत किया गया।

यहां स्वागत समारोह में मुख्य संचालिका बीके विजयलक्ष्मी दीदी ने कहा कि आज के आपाधापी के युग में और खासतौर पर कोरोना महामारी के दौर में मानसिक स्वास्थ्य की भूमिका बहुत अहम हो गई है। कई शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक व चिकित्सकीय कारणों से लोग मानसिक रूप से परेशान हैं, वे राजयोग व मेडिटेशन के माध्यम से मानसिक शांति की अनुभूति कर सकते है। खेलों में सफलता प्राप्त करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण हो गई है। स्वागत नृत्य पहल बोकड़िया ने प्रस्तुत किया। इस मौके पर बीके जितेंद्र, बीके कीर्ति, बीके विजयलक्ष्मी, बीके पदमा दीदी, डॉ. बीके जगबीर उपस्थित थे। संचालन विक्रम मार्ये ने किया।

दिव्यांग खिलाड़ियों का प्रदर्शन सराहनीय

उदयपुर (वि.)। नारायण सेवा संस्थान ने टोक्यो पैरालंपिक्स में भारतीय खिलाड़ियों द्वारा 2 गोल्ड सहित पांच पदक हासिल करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। संस्थान के चेयरमैन पद्मश्री कैलाश 'मानव' ने कहा कि संकल्प और साधना से दिव्यांग खिलाड़ियों ने यह साबित कर दिया कि हौंसले के आगे हर चुनौती बौनी है। उन्होंने खिलाड़ियों के प्रदर्शन की सराहना कर बधाई दी। अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने राजस्थान सहित अन्य राज्य सरकारों द्वारा विजेता पैराऑलम्पियन्स को पुरस्कृत किए जाने का स्वागत करते हुए कहा कि जेवेलिन थ्रो में रजत पदक विजेता देवेन्द्र झाझड़िया 2017 में उदयपुर आए थे और उन्होंने संस्थान द्वारा आयोजित पहले अखिल भारतीय दिव्यांग टेलेन्ट शो का उद्घाटन करते हुए प्रतिभागियों की हौसला अफजाई की थी।

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (11)

-देवीलाल सामर

सारे समारोह में मुझे ऐसा लगा कि मिलनसारिता, पारस्परिक आदान-प्रदान एवं मित्रता के मायने में एशियाई देश यूरोपीय देशों मुकाबले में कुछ पीछे ही थे। ये वे महानुभाव हैं जिन्होंने कठपुतलियों के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। मेरे साथ इन सब महानुभावों की मित्रता वरदान सिद्ध हुई। मैंने उनके संसर्ग से जितना सीखा उतना शायद मैं सौ किताबें पढ़कर भी नहीं सीख सकता था। मैं अपने साथ पारम्परिक पुतलियां और उनके साथ संगीत टेप करके अपने साथ ले गया था। मेरा प्रदर्शन यद्यपि छोटा था परन्तु बहुत ही आकर्षक था। मेरा वह प्रदर्शन इतना अच्छा लगा कि उसका संचालन सीखने के लिए कई लोग मेरे कमरे में आने लगे। पुतलियां किसी मानव-अमानव की नकल नहीं होतीं। उनका स्वतंत्र अस्तित्व होता है और वे किसी विशिष्ट लोक से मानव का मनोरंजन करने पृथ्वी लोक पर आती हैं।

यह समारोह पूरे पन्द्रह दिन तक चलता रहा। मुझे प्राय: सभी पुतली प्रदर्शनों को देखने एवं उनके अध्ययन का भरपूर अवसर मिला। मुझे भेंट स्वरूप इतनी पुतलियां प्राप्त हुई कि उन्हें लाना भी मेरे लिए मुश्किल हो गया। कुछ मित्रों ने मुझे अपने मुल्क की ओर प्रवचन एवं प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया। उसके परिणामस्वरूप मैंने पूर्वी जर्मनी, जैकोस्लोवेकिया, हंगरी आदि की यात्रा की। सभी दर्शनीय स्थान देखे परन्तु वह प्रदर्शन मैं कभी नहीं भूलूंगा जो मैंने एक बच्चों के स्कूल में अलीजाबेथ शुल्ज के साथ दिया था।

प्रत्येक प्रतिनिधि को उसकी भाषा जानने वाला एक रूमानी दुभाषिया अवश्य दिया जाता था जो अधिकांश समय उनके साथ रहता था। मेरा दुभाषिया एक लड़की थी जो केवल दुभाषिया मात्र ही नहीं थी वरन् भारत के बारे में अधिकाधिक जानने की जिज्ञासु भी थी। उसने अपने पति एवं माता-पिता को भी मुझसे मिलाया। यह सारा परिवार पन्द्रह दिन के मेरे बुखारेस्ट प्रवास में मेरा परिवार-सा बन गया।

फिर तो मेरी अनेक लोगों से भेंट होती रही। मैं भारतीय पोशाक में रहता था। सिर पर टोपी या साफा रखे रहता था। पांवों में जोधपुरी कलाबूती जूतियां पहने रहता था। मैं दिखने में भी अच्छा था इस पर सबका आकर्षण का केन्द्र बन गया। उस समारोह में 40 मुल्कों के पुतली दल आये थे और उनमें से कुछ मेरी ही तरह थे जो केवल परिवेक्षक के रूप में अपने देश द्वारा मनोनीत थे। धीरे-धीरे मेरा सबसे परिचय होने लगा और मैं इतना व्यस्त हो गया कि कोई बात सोचने की भी मुझे फुरसत नहीं रही। कभी-कभी तो मैं अपने प्रियजनों को पत्र लिखना भी भूल गया।

जिन व्यक्तियों ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया था वे थे डॉ. जान मालक, चेकोस्लोवेकिया के डॉ. जान माली, जेकोस्टोवेकिया की डॉ. वाचकोवा और रूमानिया की श्रीमती निकोलोस्क, लन्दन के श्रीयुत जानवाइट, अमेरिका की श्रीमती मार्जरी मेकफरलन, फ्रांस के श्रीयुत टेम्पोरल, इटली की श्रीमती मेरिया मिसिनोरीली, पोलेण्ड के श्री हेनरी, रूस के श्रीयुत ओ ब्रोत्जोव, लन्दन के डॉ. फिलपोट और श्रीमती एलिजाबेथ शुल्ज, जर्मनी की कुमारी एलजाबेथ और श्रीयुत एलब्रेट रोजर; ये सभी माहनुभाव ऐसे थे जिनसे मेरा निकट सम्पर्क स्थापित हुआ।

एशिया के भी कई मुल्क थे जिन्होंने इस समारोह में भाग लिया था। उनमें चीन, जापान, कोरिया, इजिप्ट एवं थाइलैण्ड प्रमुख थे। सारे समारोह में मुझे ऐसा लगा कि मिलनसारिता पारस्परिक आदान-प्रदान एवं मित्रता के मायने में एशियाई देश यूरोपीय देशों मुकाबले में कुछ पीछे ही थे। जिन लोगों के नाम मैंने ऊपर गिनाये हैं ये वे महानुभाव हैं जिन्होंने कठपुतलियों के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है।

श्रीमती मेरिया मिसिनोरोली इटली की प्रथम महिला हैं जिन्होंने इटालियन पुतलियों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर प्रदान किया है। डॉ. फिलपोट लन्दन के वे कठपुतली मर्मज्ञ हैं जो शैक्षणिक पुतलियों की दृष्टि से विश्व के सबसे बड़े अगुआ हैं। फ्रांस के श्री टेम्पोरल आधुनिक पुतलियों केसम्राट हैं और प्रयोग अनुकरणीय माने गये हैं। डॉ. वाडिक चोवाजेकोस्लोवाकिया के पुतली प्रयोग की सम्राज्ञी मानी जाती थी। कुछ वर्ष पूर्व हवाई दुर्घटना के कारण उनकी मृत्यु हो गई। वे जेकोस्लोवाकिया सरकार की पुतली विभाग की अध्यक्षा थीं और उन्हीं के कारण विश्व में प्रथमबार पुतलियों को विश्वविद्यालय स्तर तक मान्यता प्राप्त हुई थी।

रूस के श्रीयुत ओवोटजोव रूस के सबसे बड़े पुतली प्रयोगी हैं। वे मोस्को पुतली थियेटर के निदेशक हैं तथा कईबार देश-विदेशों का दौरा अपनी पुतलियों के साथ कर चुके हैं। लन्दन की कुमारी एजिलाबेथ कोलोमन एकाकी पुतली चलाने की मर्मज्ञा मानी जाती हैं और पूर्वी जर्मनी की श्रीमती एलजाबेथ शुल्ज जर्मनी के शैक्षणिक पुतली प्रायोगियों में विशिष्ट स्थान रखती हैं। अमेरिका की डॉ. मार्जरी मेकफरलन भी शैक्षणिक पुतलियों की दिशा में विशेषज्ञा समझी जाती हैं। पुतली साहित्य की दृष्टि से भी इन सब महानुभावों द्वारा लिखी हुई पुस्तकें सर्वोपरि स्थान रखती हैं।

मेरे साथ इन सब महानुभावों की मित्रता वरदान सिद्ध हुई क्योंकि मैंने उनके संसर्ग से जितना सीखा उतना शायद मैं सौ किताबें पढ़कर भी नहीं सीख सकता था। इनमें डॉ. जॉन मलिक तो विश्व के वे मनीषी हैं जिनकी पुतली विषयक सेवाएं हम कभी भी नहीं भूल सकते। वे विश्व पुतली संगठन भुनीया के सेक्रेटरी जनरल भी हैं।

बुखारेस्ट का यह समारोह रूमानिया के पुतली विभाग की ओर से पांच वर्ष में एकबार आयोजित होता है। इस समारोह में पुतलियों की कई प्रतियोगिताएं होती हैं जिनमें आधुनिक और पारम्परिक पुतलियों की प्रतियोगिता सर्वोपरि है। इन प्रतियोगिताओं के लिए सभी दल बड़ी तैयारी करके आते हैं। भारत की ओर से पुतली प्रतियोगिता में शरीक होने का प्रश्न तो पहले ही समाप्त हो चुका था परन्तु एक मेहमान के रूप में एकाकी पुतली प्रदर्शन प्रस्तुत करने के लिए मुझे भी आमंत्रित किया गया था। मैं अपने साथ पारम्परिक पुतलियां और उनके साथ चलने वाला संगीत टेप करके अपने साथ ले गया था। प्रदर्शन से पूर्व मैंने अन्य मित्रों की सहायता से खूब अभ्यास भी कर लिया था। मेरा प्रदर्शन यद्यपि छोटा था परन्तु बहुत ही आकर्षक था। रूमानिया के कई अखबारों में उसकी तारीफ भी छपी थी और तस्वीरें भी।

कई लोगों ने कहा, आपका प्रदर्शन इतना ऊंचा था फिर आपने प्रतियोगिता में प्रवेश क्यों नहीं लिया। मैं किसको क्या कारण बतलाता परन्तु वह अफसोस आज भी मेरे दिल में बना हुआ है। मेरा वह प्रदर्शन इतना अच्छा लगा कि उसका संचालन सीखने के लिए कई लोग मेरे कमरे में आने लगे। जो पुतलियां मैं अपने साथ ले गया था वे भी बड़ी रंगीन एवं आकर्षक थीं। उनकी एक प्रदर्शनी मेरे कमरे में निरन्तर जमी रहती थी जिन्हें देखने के लिए दिनभर मेला सा लगा रहता था।

समारोह में कठपुतलीविज्ञों की अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियां होती थीं जिनमें मुझे भी भाग लेने एवं पत्रवाचन का अवसर मिला था। मेरा विषय था, राजस्थानी शैली की भारतीय पुतलियों का कलातंत्र। उसमें मैंने यही दर्शाने का प्रयत्न किया था कि पुतलियां किसी मानव-अमानव की नकल नहीं होतीं। उनका स्वतंत्र अस्तित्व होता है और वे किसी विशिष्ट लोक से मानव का मनोरंजन करने पृथ्वी लोक पर आती हैं। मैंने यह भी कहा कि उनकी अपूर्णता में ही पूर्णता है और उनको धागे आदि से अत्यधिक पेचीदा एवं मानव की प्रत्येक हरकत पैदा करने योग्य बनाने से ये अपना पुतलीमूलक विशेष गुण खो देती हैं।

इस विषय पर कई दिनों तक चर्चाएं होती रही और अंत में विद्वानों को यही कहना पड़ा कि आधुनिक यूरोपीय पुतलीकारों को भारतीय पुतलियों से बहुत कुछ सीखना है। कुछ विद्वानों ने यहां तक कहा कि आधुनिक पुतलियों में अतींद्रियता की जो अति आ गई है वह आधुनिक चित्रकला की तरह आमजनता को ग्राह्य नहीं होती। भारतीय पुतलियों में भी प्रतीकात्मक एवं अति रंजनात्मक गुण है और उनका अनुपात पुतली पात्र के गुणों से शासित होता है न कि मानवी अनुपात से, परन्तु उन्होंने अतींद्रियता को जड़मूल से ललकारा है। उसका यह अर्थ नहीं है कि वह एक तिनके जैसी टेढ़ीमेढ़ी आकृतिहीन एवं बिना मतलब की किसी आकृति को ही पुतली मान लें। मेरे अभिभाषण में इस बात पर भी जोर डाला गया था कि मानवी-नाटक और पुतली-नाटक के नाट्यतत्व समान नहीं होते और एक-दूसरे को किसी तरह प्रभावित नहीं करते।

यह समारोह पूरे पन्द्रह दिन तक चलता रहा और मुझे प्राय: सभी पुतली प्रदर्शनों को देखने एवं उनके अध्ययन का भरपूर अवसर मिला। मुझे भेंट स्वरूप इतनी पुतलियां प्राप्त हुई कि उन्हें लाना भी मेरे लिए मुश्किल हो गया। जो पुस्तकें मुझे भेंट में मिली उनकी खासा लाइब्रेरी भारतीय लोककला मण्डल में बन गई। मैं कुछ ही दिनों में सबकी आंखों का तारा बन गया। कुछ मित्रों ने मुझे अपने मुल्क की ओर प्रवचन एवं प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया। उसके परिणामस्वरूप मैंने पूर्वी जर्मनी, जैकोस्लोवेकिया, हंगरी आदि की यात्रा की। प्रत्येक मुल्क में मेरा प्रवास लगभग एक सप्ताह तक रहा। प्रतिदिन मुझे तीन-चार जगह प्रवचन देने पड़ते थे और उनके साथ ही प्रदर्शन भी। इस कार्य के लिए मुझे पूर्वी जर्मनी के लैब्जिग ड्रेजडन बर्लिन जैकोस्लोवाकिया के प्राहा तथा हंगरी के बुडापेस्ट नगर में कुछ समय बिताने एवं विद्वानों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस आतिथ्य में मुझे नि:शुल्क निवास, भोजन, नि:शुल्क यातायात, नि:शुल्क यात्रा एवं प्रतिदिन का इतना भत्ता मिलता था जो मुझसे खर्च भी नहीं हो सकता था। इन सभी स्थानों के विशिष्ट कलाकारों, साहित्यकारों, बेलेरोना नाट्यविद, कवि, संगीतज्ञ, नर्तक आदि से मिलने का मौका मिला। दर्शनीय स्थान देखने का मैं जिक्र करने लगूं तो ऐसा लगेगा कि मैं अपना यात्रा वर्णन लिख रहा हूं। मेरा कतई वह प्रयोजन नहीं है।

विशिष्ट निमंत्रण प्राप्त स्थानों के अलावा भी मैंने भारत लौटने तक यूरोप का कोई भी ऐसा स्थान नहीं छोड़ा जो मेरे ज्ञानवर्द्धन के लिए आवश्यक था। मुझे बचपन से चीजें देखने का शौक नहीं रहा है। औपचारिक दृष्टि से मैंने दर्शनीय स्थल, संग्रहालय, चित्र गेलेरी, पार्क, बाग-बगीचे, गिरजाघर, समाधिस्थल, संयंत्रक, औद्योगिक प्रतिष्ठान अवश्य देखे परन्तु मुझे विद्वानों से मिलने विशिष्ट कला प्रयोग देखने, समझने एवं अध्ययन करने का बहुत शौक रहा।

मैंने मिस्र के पिरामिड अवश्य देखे परन्तु मुझे उसकी एक भी बात याद नहीं है जितनी मिस्र के भरे रामसे रोड़ पर स्थित पयेटा थियेटर की जहां मैंने भारतीय पुतलियों का प्रदर्शन दिया था और विद्वानों के समक्ष प्रवचन भी। बर्लिन में मैंने प्राय: सभी दर्शनीय स्थान देखे परन्तु वह प्रदर्शन मैं कभी नहीं भूलूंगा जो मैंने एक बच्चों के स्कूल में अलीजाबेथ शुल्ज के साथ दिया था।

- क्रमश:

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।